आसान हिन्दी तर्जुमा

हाफ़िज़ नज़र अहमद

Hindi transliteration is done by
a team of
www.understandquran.com

UNDERSTAND QUR'AN ACADEMY
Tel: 0091-6456-4829 / 0091-9908787858
Hyderabad, India

आसान तर्जुमा कुरआ़ने मजीद

तस्वीद व तरतीब ः हाफ़िज़ नज़र अहमद

प्रिन्सिपल तालीमुल कुरआ़न ख़त व किताबत स्कूल, लाहौर-5

नज़र सानी

★ मौलाना अज़ीज़ जुबैदी

मुदीर मुजल्ला "अहले हदीस", लाहौर

★ मौलाना प्रोफेसर मुज़म्मिल अहसन शेख, एम॰ ए॰

(अरबी - इसलामियात - तारीख़)

★ मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद हुसैन नईमी

मुहतमिम जामिआ़ नईमिया, लाहौर

★ मौलाना मुहम्मद सरफ़राज़ नईमी अल-अज़हरी, एम॰ ए॰

फ़ाज़िल दरस-ए-निज़ामी, (अरबी - इसलामियात)

★ मौलाना अ़ब्दुर्रऊफ़ मलिक

ख़तीब जामअ़ आस्ट्रेलिया, लाहौर

★ मौलाना सईदुर्रहमान अ़लवी

ख़तीब जामअ़ मस्जिदुश शिफ़ा, शाह जमाल, लाहौर

अल्हम्दुलिल्लाह

"आसान तर्जुमा कुरआ़न मजीद" कई एतिबार से मुन्फ़रिद हैः

- हर लफ़्ज़ का जुदा जुदा तर्जुमा और पूरी आयत का आसान तर्जुमा एक्साँ है।
- यह तर्जुमा तीनों मसलक के उलमा-ए-किराम (अहले सुन्नत व अल जमाअ़त, देव बन्दी, बरेलवी और अहले हदीस) का नज़र सानी शुदा और उन का मुत्ताफ़िकुन अलैह है।

इंशा अल्लाह

अ़रबी से ना वाक़िफ़ भी चन्द पारे पढ़ कर इस की मदद से पूरे कलामुल्लाह का तर्जुमा बखूबी समझ सकेंगे।

ऐ अललाह करीम! इस ख़िदमत को बा बरकत और बाइस-ए-ख़ैर बनादे। ख़ुसुसन तलबह के लिए कुरआ़न फ़हमी और अ़मल बिल कुरआ़न का ज़रिया और बन्दा के लिऐ फ़लाह-ए-दारैन का वसीला बनादे (आमीन).

हाफ़िज़ नज़र अहमद

10 रबी उस्सानी 1408 हिज्री

3 दिसमबर 1987

बैतुल्लाह अलहराम, मक्का मुकर्रमह

www.understandquran.com

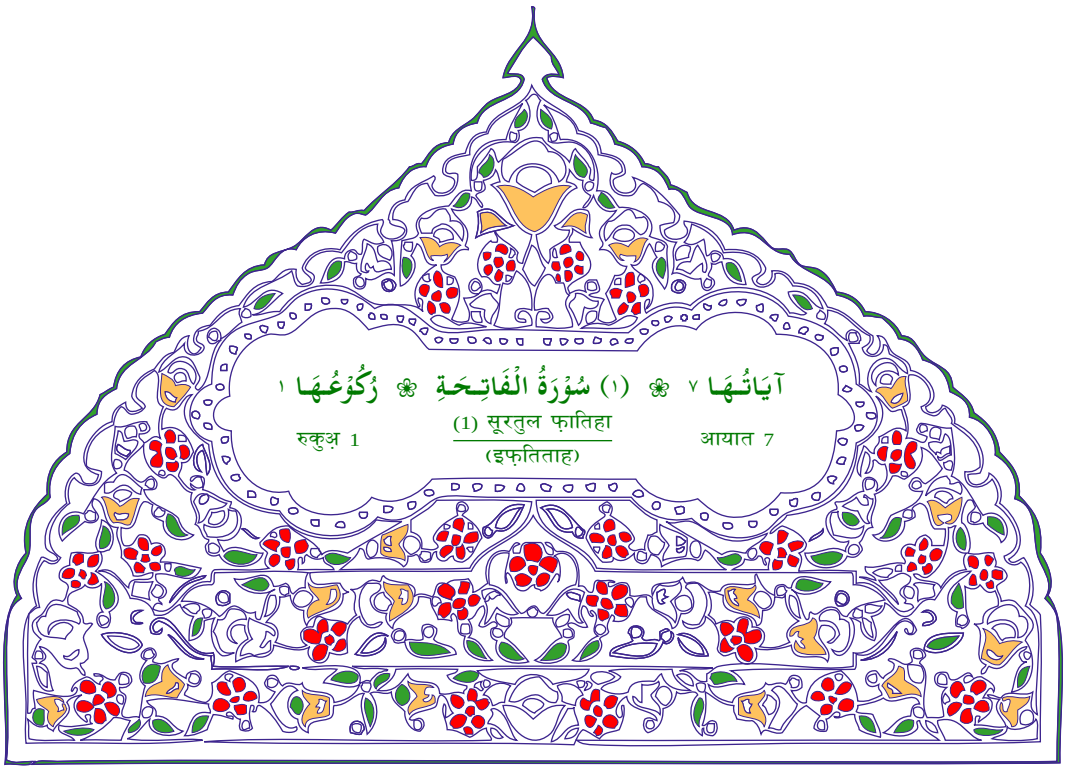

المنزل ١

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ١

1	रह्म करने वाला	बहुत मेह्रबान	अल्लाह	नाम से

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۙ٢ الرَّحْمٰنِ

बहुत मेह्रबान	2	तमाम जहान	रब	अल्लाह के लिए	तमाम तारीफ़ें

الرَّحِيْمِ ۙ٣ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ؕ٤ اِيَّاكَ نَعْبُدُ

इबादत करते हैं हम	सिर्फ़ तेरी ही	4	बदला	दिन	मालिक	3	रह्म करने वाला

وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ؕ٥ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ

रास्ता	हमें हिदायत दे	5	हम मदद चाहते हैं	और सिर्फ़ तुझ ही से

الْمُسْتَقِيْمَ ۙ٦ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۙ

उन पर	तू ने इन्आ़म किया	उन लोगों का	रास्ता	6	सीधा

ع ١ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ع ۧ٧

7	जो गुमराह हुए	और न	उन पर	ग़ज़ब किया गया	न

अल्लाह के नाम से
जो बहुत मेह्रबान,
रह्म करने वाला है। (1)

तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं जो तमाम जहानों का रब है, (2)

बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला। (3)

बदले के दिन का मालिक। (4)

हम सिर्फ़ तेरी ही इबादत करते हैं और सिर्फ़ तुझ ही से मदद चाहते हैं। (5)

हमें सीधे रास्ते की हिदायत दे, (6)

उन लोगों का रास्ता जिन पर तू ने इन्आ़म किया न उन का जिन पर ग़ज़ब किया गया, और न उन का जो गुमराह हुए। (7)

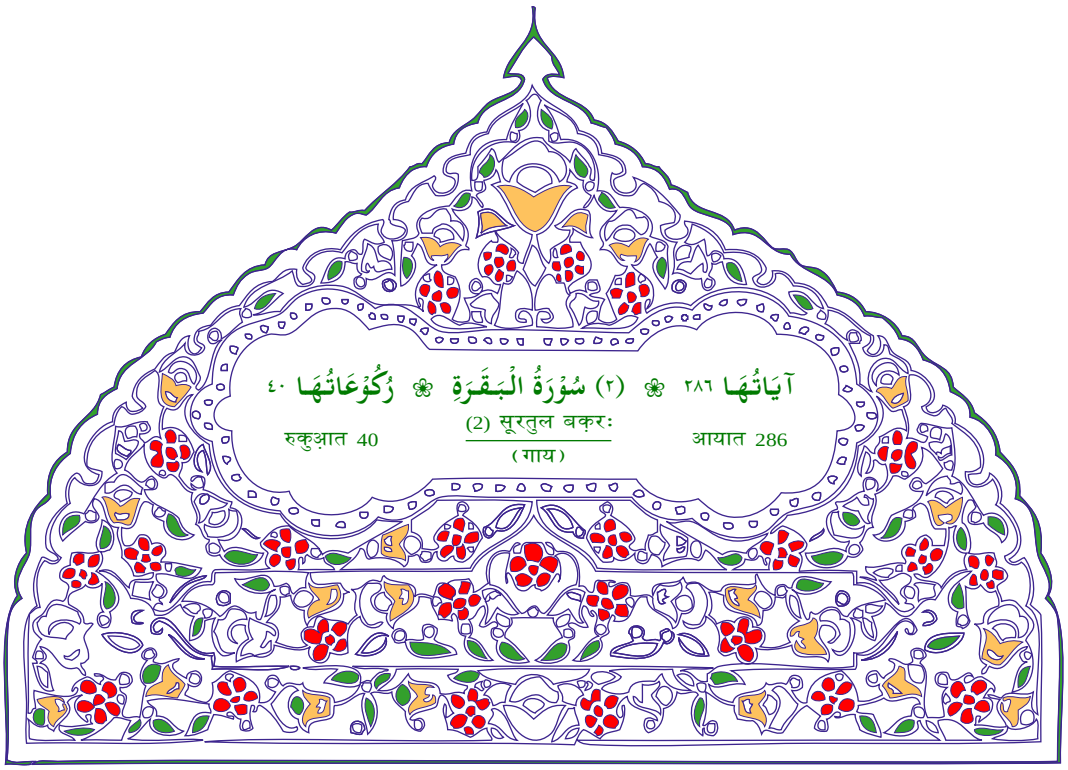

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

रहम करने वाला	बहुत मेहरबान	अल्लाह	नाम से

الٓمّٓ ﴿١﴾ ذٰلِكَ الْكِتٰبُ لَارَيْبَ ۛ فِيْهِ ۛ هُدًى

हिदायत	इस में	नहीं शक	किताब	यह	1	अलिफ़-लाम-मीम

لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿٢﴾ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِالْغَيْبِ

ग़ैब पर	ईमान लाते हैं	जो लोग	2	परहेज़गारों के लिए

وَيُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ﴿٣﴾

3	वह ख़र्च करते हैं	हम ने उन्हें दिया	और उस से जो	नमाज़	और क़ाइम करते हैं

وَالَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَمَآ

और जो	आप की तरफ़	नाज़िल किया गया	उस पर जो	ईमान रखते हैं	और जो लोग

اُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ ۚ وَبِالْاٰخِرَةِ هُمْ يُوْقِنُوْنَ ﴿٤﴾

4	यक़ीन रखते हैं	वह	और आख़िरत पर	आप से पहले	से	नाज़िल किया गया

अल्लाह के नाम से
जो बहुत मेहरबान,
रहम करने वाला है।

अलिफ़-लाम-मीम। (1)

यह किताब है इस में कोई शक नहीं, परहेज़गारों के लिए हिदायत, (2)

जो ग़ैब पर ईमान लाते हैं, और क़ाइम करते हैं नमाज़, और जो कुछ हम ने उन्हें दिया उस में से ख़र्च करते हैं, (3)

और जो लोग उस पर ईमान रखते हैं जो आप (स) पर नाज़िल किया गया और जो आप (स) से पहले नाज़िल किया गया और वह आख़िरत पर यक़ीन रखते हैं। (4)

أُولٰٓئِكَ عَلٰى هُدًى مِّنْ رَّبِّهِمْ ۗ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿٥﴾

5	कामयाब	वह	और वही लोग	अपना रब	से	हिदायत	पर	वही लोग

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا سَوَآءٌ عَلَيْهِمْ ءَاَنْذَرْتَهُمْ اَمْ لَمْ تُنْذِرْهُمْ

डराएं उन्हें	न	या	ख़्वाह आप उन्हें डराएं	उन पर	बराबर	कुफ़्र किया	जिन लोगों ने	बेशक

لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٦﴾ خَتَمَ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ وَعَلٰى سَمْعِهِمْ ۗ وَعَلٰٓى

और पर	उन के कान	और पर	उन के दिल	पर	मुहर लगा दी अल्लाह ने	6	ईमान लाएंगे	नहीं

اَبْصَارِهِمْ غِشَاوَةٌ ۫ وَّلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿٧﴾ ع وَمِنَ النَّاسِ ع ١

लोग	और से	7	बड़ा	अ़ज़ाब	और उन के लिए	पर्दा	उन की आँखें

وقف لازم

مَنْ يَّقُوْلُ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَبِالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَمَا هُمْ بِمُؤْمِنِيْنَ ﴿٨﴾

8	ईमान वाले	वह	और नहीं	आख़िरत	और दिन पर	अल्लाह पर	हम ईमान लाए	कहते हैं	जो

يُخٰدِعُوْنَ اللّٰهَ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۚ وَمَا يَخْدَعُوْنَ اِلَّآ اَنْفُسَهُمْ

अपने आप	मगर	धोका देते	और नहीं	ईमान लाए	और जो लोग	अल्लाह	वह धोका देते हैं

وَمَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٩﴾ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ ۙ فَزَادَهُمُ اللّٰهُ مَرَضًا ۚ

बीमारी	सो अल्लाह ने बढ़ा दी उन की	बीमारी	उन के दिल (जमा)	में	9	समझते हैं	और नहीं

وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۙ۬ بِمَا كَانُوْا يَكْذِبُوْنَ ﴿١٠﴾ وَاِذَا قِيْلَ

कहा जाता है	और जब	10	वह झूट बोलते हैं	क्योंकि	दर्दनाक	अ़ज़ाब	और उन के लिए

لَهُمْ لَا تُفْسِدُوْا فِي الْاَرْضِ ۙ قَالُوْٓا اِنَّمَا نَحْنُ مُصْلِحُوْنَ ﴿١١﴾

11	इस्लाह करने वाले	हम	सिर्फ़	वह कहते हैं	ज़मीन में	न फ़साद फैलाओ	उन्हें

اَلَآ اِنَّهُمْ هُمُ الْمُفْسِدُوْنَ وَلٰكِنْ لَّا يَشْعُرُوْنَ ﴿١٢﴾ وَاِذَا

और जब	12	नही समझते	और लेकिन	फ़साद करने वाले	वही	बेशक वह	सुन रखो

قِيْلَ لَهُمْ اٰمِنُوْا كَمَآ اٰمَنَ النَّاسُ قَالُوْٓا اَنُؤْمِنُ كَمَآ اٰمَنَ

ईमान लाए	जैसे	क्या हम ईमान लाएं	वह कहते हैं	लोग	ईमान लाए	जैसे	तुम ईमान लाओ	उन्हें	कहा जाता है

السُّفَهَآءُ ۗ اَلَآ اِنَّهُمْ هُمُ السُّفَهَآءُ وَلٰكِنْ لَّا يَعْلَمُوْنَ ﴿١٣﴾

13	वह जानते	नहीं	और लेकिन	बेवक़ूफ़	वही	ख़ुद वह	सुन रखो	बेवक़ूफ़

وَاِذَا لَقُوا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قَالُوْٓا اٰمَنَّا ۚ وَاِذَا خَلَوْا اِلٰى

पास	अकेले होते हैं	और जब	हम ईमान लाए	कहते हैं	ईमान लाए	जो लोग	और जब मिलते हैं

شَيٰطِيْنِهِمْ ۙ قَالُوْٓا اِنَّا مَعَكُمْ ۙ اِنَّمَا نَحْنُ مُسْتَهْزِءُوْنَ ﴿١٤﴾

14	मज़ाक़ करते हैं	हम	महज़	तुम्हारे साथ	हम	कहते हैं	अपने शैतान

اَللّٰهُ يَسْتَهْزِئُ بِهِمْ وَيَمُدُّهُمْ فِيْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ﴿١٥﴾

15	अन्धे हो रहे हैं	उन की सरकशी में	और बढ़ाता है उन को	उन से	मज़ाक़ करता है	अल्लाह

वही लोग अपने रब की तरफ़ से हिदायत पर हैं, और वही लोग कामयाब हैं। (5)

बेशक जिन लोगों ने कुफ़्र किया, उन पर बराबर है आप (स) उन्हें डराएं या न डराएं वह ईमान नहीं लाएंगे। (6)

अल्लाह ने उन के दिलों पर और उन के कानों पर मुहर लगा दी। और उन की आँखों पर पर्दा है। और उन के लिए बड़ा अ़ज़ाब है। (7)

और कुछ लोग हैं जो कहते हैं हम ईमान लाए अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर और वह ईमान वाले नहीं। (8)

वह धोका देते हैं अल्लाह को और ईमान वालों को, हालांकि वह नहीं धोका देते मगर अपने आप को, और वह नहीं समझते। (9)

उन के दिलों में बीमारी है, सो अल्लाह ने उन की बीमारी बढ़ा दी, और उन के लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है। क्योंकि वह झूट बोलते हैं। (10)

और जब उन्हें कहा जाता है कि ज़मीन में फ़साद न फैलाओ तो कहते हैं कि हम सिर्फ़ इस्लाह करने वाले हैं। (11)

सुन रखो बेशक वही लोग फ़साद करने वाले हैं और लेकिन नहीं समझते। (12)

और जब उन्हें कहा जाता है तुम ईमान लाओ जैसे लोग ईमान लाए तो वह कहते हैं क्या हम ईमान लाएं जैसे बेवक़ूफ़ ईमान लाए? सुन रखो ख़ुद वही बेवक़ूफ़ हैं लेकिन वह जानते नहीं (13)

और जब उन लोगों से मिलते हैं जो ईमान लाए तो कहते हैं हम ईमान लाए और जब अपने शैतानों के पास अकेले होते हैं तो कहते हैं हम तुम्हारे साथ हैं, हम तो महज़ मज़ाक़ करते हैं। (14)

अल्लाह उन से मज़ाक़ करता है और उन को उन की सरकशी में बढ़ाता है, वह अन्धे हो रहे हैं। (15)

أُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اشْتَرَوُا الضَّلٰلَةَ بِالْهُدٰى ۪ فَمَا رَبِحَتْ تِّجَارَتُهُمْ

उन की तिजारत	तो न फ़ाइदा दिया	हिदायत के बदले	गुमराही	मोल ली	जिन्हों ने	यही लोग

وَمَا كَانُوْا مُهْتَدِيْنَ ﴿١٦﴾ مَثَلُهُمْ كَمَثَلِ الَّذِى اسْتَوْقَدَ نَارًا ۚ

आग	भड़काई	वह जिस ने	जैसे मिसाल	उन की मिसाल	16	वह हिदायत पाने वाले	और न थे

فَلَمَّآ اَضَآءَتْ مَا حَوْلَهٗ ذَهَبَ اللّٰهُ بِنُوْرِهِمْ وَتَرَكَهُمْ فِىْ

में	और उन्हें छोड़ दिया	उन की रौशनी	छीन ली अल्लाह ने	उस का इर्द गिर्द	रौशन कर दिया	फिर जब

ظُلُمٰتٍ لَّا يُبْصِرُوْنَ ﴿١٧﴾ صُمٌّۢ بُكْمٌ عُمْىٌ فَهُمْ لَا يَرْجِعُوْنَ ﴿١٨﴾ ۙ

18	नहीं लौटेंगे	सो वह	अन्धे	गूँगे	बहरे	17	वह नहीं देखते	अन्धेरे

اَوْ كَصَيِّبٍ مِّنَ السَّمَآءِ فِيْهِ ظُلُمٰتٌ وَّرَعْدٌ وَّبَرْقٌ ۚ يَجْعَلُوْنَ

वह ठोंस लेते हैं	और बिजली की चमक	और गरज	अन्धेरे	उस में	आस्मान	से	जैसे बारिश	या

اَصَابِعَهُمْ فِىْٓ اٰذَانِهِمْ مِّنَ الصَّوَاعِقِ حَذَرَ الْمَوْتِ ؕ وَاللّٰهُ مُحِيْطٌۢ

घेरे हुए	और अल्लाह	मौत	डर	कड़क (बिजली)	सबब	अपने कान	में	अपनी उनगलियां

بِالْكٰفِرِيْنَ ﴿١٩﴾ يَكَادُ الْبَرْقُ يَخْطَفُ اَبْصَارَهُمْ ؕ كُلَّمَآ اَضَآءَ لَهُمْ

उन पर	वह चमकी	जब भी	उन की निगाहें	उचक ले	बिजली	क़रीब है	19	काफ़िरों को

مَّشَوْا فِيْهِ ۙ وَاِذَآ اَظْلَمَ عَلَيْهِمْ قَامُوْا ؕ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَذَهَبَ

छीन लेता	चाहता अल्लाह	और अगर	वह खड़े हुए	उन पर	अन्धेरा हुआ	और जब	उस में	चल पड़े

ع ١٣ ٢ ٢ بِسَمْعِهِمْ وَاَبْصَارِهِمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٢٠﴾ ع

20	क़ादिर	हर चीज़	पर	बेशक अल्लाह	और उन की आँखें	उन की शुनवाई

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اعْبُدُوْا رَبَّكُمُ الَّذِىْ خَلَقَكُمْ وَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ

तुम से पहले	से	और वह लोग जो	तुम्हें पैदा किया	जिस ने	अपना रब	तुम इबादत करो	लोगो	ऐ

لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ﴿٢١﴾ ۙ الَّذِىْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ فِرَاشًا وَّالسَّمَآءَ بِنَآءً ۪

छत	और आस्मान	फ़र्श	ज़मीन	तुम्हारे लिए	बनाया	जिस ने	21	परहेज़गार हो जाओ	ताकि तुम

وَّاَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَخْرَجَ بِهٖ مِنَ الثَّمَرٰتِ رِزْقًا لَّكُمْ ۚ

तुम्हारे लिए	रिज़्क़	फल (जमा)	से	उस के ज़रीए	फिर निकाला	पानी	आस्मान	से	और उतारा

فَلَا تَجْعَلُوْا لِلّٰهِ اَنْدَادًا وَّاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٢٢﴾ وَاِنْ كُنْتُمْ فِىْ رَيْبٍ

शक	में	तुम हो	और अगर	22	जानते हो	और तुम	कोई शरीक	अल्लाह के लिए	ठहराओ	सो न

مِّمَّا نَزَّلْنَا عَلٰى عَبْدِنَا فَاْتُوْا بِسُوْرَةٍ مِّنْ مِّثْلِهٖ ۪ وَادْعُوْا

और बुला लो	इस जैसी	से	एक सूरत	तो ले आओ	अपना बन्दा	पर	हम ने उतारा	से जो

شُهَدَآءَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٢٣﴾

23	सच्चे	तुम हो	अगर	अल्लाह	सिवा	से	अपने मददगार

यही लोग हैं जिन्हों ने हिदायत के बदले गुमराही मोल ली, तो उन की तिजारत ने कोई फ़ाइदा न दिया, और न वह हिदायत पाने वाले थे। (16)

उन की मिसाल उस शख़्स जैसी है जिस ने आग भड़काई, फिर आग ने उस का इर्द गिर्द रौशन कर दिया तो अल्लाह ने छीन ली उन की रौशनी और उन्हें अन्धेरों में छोड़ दिया वह नहीं देखते। (17)

वह बहरे गूँगे और अन्धे हैं सो वह नहीं लौटेंगे। (18)

या जैसे आस्मान से बारिश हो, उस में अन्धेरे हों और गरज और बिजली की चमक, वह अपने कानों में अपनी उनगलियां ठोंस लेते हैं कड़क के सबब मौत के डर से, और अल्लाह काफ़िरों को घेरे हुए है। (19)

क़रीब है कि बिजली उन की निगाहें उचक ले, जब भी वह उन पर चमकी वह उस में चल पड़े और जब उन पर अन्धेरा हुआ वह खड़े हो गए और अगर अल्लाह चाहता तो छीन लेता उन की शुनवाई और उन की आँखें, बेशक अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है। (20)

ऐ लोगो! तुम अपने रब की इबादत करो जिस ने तुम्हें पैदा किया और उन लोगों को जो तुम से पहले हुए ताकि तुम परहेज़गार हो जाओ। (21)

जिस ने तुम्हारे लिए ज़मीन को फ़र्श बनाया और आस्मान को छत, और आस्मान से पानी उतारा, फिर उस के ज़रीए फल निकाले तुम्हारे लिए रिज़्क़, सो अल्लाह के लिए कोई शरीक न ठहराओ और तुम जानते हो। (22)

और अगर तुम्हें इस (कलाम) में शक हो जो हम ने अपने बन्दे पर उतारा तो इस जैसी एक सूरत ले आओ, और बुला लो अपने मददगार अल्लाह के सिवा अगर तुम सच्चे हो। (23)

فَاِنْ لَّمْ تَفْعَلُوْا وَلَنْ تَفْعَلُوْا فَاتَّقُوا النَّارَ الَّتِىْ وَقُوْدُهَا

उस का इंधन	जिस का	आग	तो डरो	और हरगिज़ न कर सकोगे	तुम न कर सको	फिर अगर

النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ ۚ اُعِدَّتْ لِلْكٰفِرِيْنَ ﴿٢٤﴾ وَبَشِّرِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

ईमान लाए	जो लोग	और ख़ुशख़बरी दो	24	काफ़िरों के लिए	तैयार की गई	और पत्थर	इन्सान

وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ اَنَّ لَهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ؕ كُلَّمَا

जब भी	नहरें	उन के नीचे	से	बहती हैं	बाग़ात	उन के लिए	कि	नेक	और उन्हों ने अ़मल किए

رُزِقُوْا مِنْهَا مِنْ ثَمَرَةٍ رِّزْقًا ۙ قَالُوْا هٰذَا الَّذِىْ رُزِقْنَا مِنْ قَبْلُ

पहले	से	हमें खाने को दिया गया	वह जो कि	यह	वह कहेंगे	रिज़्क़	कोई फल	से	उस से	खाने को दिया जाएगा

وَاُتُوْا بِهٖ مُتَشَابِهًا ؕ وَلَهُمْ فِيْهَآ اَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ ۙ وَّهُمْ فِيْهَا

उस में	और वह	पाकीज़ा	बीवियां	उस में	और उन के लिए	मिलता जुलता	उस से	हालांकि उन्हें दिया गया

خٰلِدُوْنَ ﴿٢٥﴾ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَسْتَحْىٖٓ اَنْ يَّضْرِبَ مَثَلًا مَّا بَعُوْضَةً فَمَا

ख़्वाह जो	मच्छर	जो	कोई मिसाल	वह बयान करे	कि	नहीं शर्माता	बेशक अल्लाह	25	हमेशा रहेंगे

فَوْقَهَا ؕ فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فَيَعْلَمُوْنَ اَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّهِمْ ۚ

उन का रब	से	हक़	कि वह	वह जानते हैं	ईमान लाए	सो जो लोग	उस से ऊपर

وَاَمَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَيَقُوْلُوْنَ مَاذَآ اَرَادَ اللّٰهُ بِهٰذَا مَثَلًا ۘ يُضِلُّ وقف لازم

वह गुमराह करता है	मिसाल	इस से	इरादा किया अल्लाह ने	क्या	वह कहते हैं	कुफ़्र किया	और जिन लोगों ने

بِهٖ كَثِيْرًا وَّيَهْدِىْ بِهٖ كَثِيْرًا ؕ وَمَا يُضِلُّ بِهٖٓ اِلَّا الْفٰسِقِيْنَ ﴿٢٦﴾ ۙ

26	नाफ़रमान	मगर	इस से	और नहीं गुमराह करता	बहुत लोग	इस से	और हिदायत देता है	बहुत लोग	इस से

الَّذِيْنَ يَنْقُضُوْنَ عَهْدَ اللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ مِيْثَاقِهٖ ۠ وَيَقْطَعُوْنَ

और काटते हैं	पुख़्ता इक़रार	से बाद	अल्लाह से किया गया अ़हद	तोड़ते हैं	जो लोग

مَآ اَمَرَ اللّٰهُ بِهٖٓ اَنْ يُّوْصَلَ وَيُفْسِدُوْنَ فِى الْاَرْضِ ؕ اُولٰٓئِكَ

वही लोग	ज़मीन	में	और वह फ़साद फैलाते हैं	वह जोड़े रखें	कि	उस से	जिस का हुक्म दिया अल्लाह ने

هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿٢٧﴾ كَيْفَ تَكْفُرُوْنَ بِاللّٰهِ وَكُنْتُمْ اَمْوَاتًا

बेजान	और तुम थे	अल्लाह का	तुम कुफ़्र करते हो	किस तरह	27	नुक़्सान उठाने वाले	वह

فَاَحْيَاكُمْ ۚ ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيْكُمْ ثُمَّ اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٢٨﴾

28	तुम लौटाए जाओगे	उस की तरफ़	फिर	तुम्हें जिलाएगा	फिर	तुम्हें मारेगा	फिर	तो उस ने तुम्हें ज़िन्दगी बख़्शी

هُوَ الَّذِىْ خَلَقَ لَكُمْ مَّا فِى الْاَرْضِ جَمِيْعًا ۗ ثُمَّ اسْتَوٰٓى اِلَى

तरफ़	क़स्द किया	फिर	सब	ज़मीन	में	जो	तुम्हारे लिए	पैदा किया	जिस ने	वह

السَّمَآءِ فَسَوّٰىهُنَّ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ ؕ وَهُوَ بِكُلِّ شَىْءٍ عَلِيْمٌ ﴿٢٩﴾ ع ٣ ٩ ٣

29	जानने वाला	चीज़	हर	और वह	आस्मान	सात	फिर उन को ठीक बना दिया	आस्मान

फिर अगर तुम न कर सको और हरगिज़ न कर सकोगे तो उस आग से डरो जिस का इंधन इन्सान और पत्थर हैं, काफ़िरों के लिए तैयार की गई है। **(24)**

और उन लोगों को ख़ुशख़बरी दो जो ईमान लाए और उन्हों ने नेक अ़मल किए उन के लिए बाग़ात हैं जिन के नीचे नहरें बहती हैं, जब भी उन्हें उस से कोई फल खाने को दिया जाएगा वह कहेंगे यह वही है जो हमें इस से पहले खाने को दिया गया हालांकि उन्हें उस से मिलता जुलता दिया गया, और उन के लिए उस में बीवियां हैं पाकीज़ा, और वह उस में हमेशा रहेंगे। **(25)**

बेशक अल्लाह नहीं शर्माता कि कोई मिसाल बयान करे जो मच्छर जैसी हो ख़्वाह उस के ऊपर (बढ़ कर) सो जो लोग ईमान लाए वह तो जानते हैं कि वह उन के रब की तरफ़ से हक़ है, और जिन लोगों ने कुफ़्र किया वह कहते हैं अल्लाह ने इस मिसाल से क्या इरादा किया, वह इस से बहुत लोगों को गुमराह करता है और इस से बहुत लोगों को हिदायत देता है, और इस से नाफ़रमानों के सिवा किसी को गुमराह नहीं करता, **(26)**

जो लोग अल्लाह का अ़हद तोड़ते हैं उस से पुख़्ता इक़रार करने के बाद, और उस को काटते हैं जिस का अल्लाह ने हुक्म दिया था कि वह उसे जोड़े रखें और वह ज़मीन में फ़साद फैलाते हैं, वही लोग नुक़्सान उठाने वाले हैं। **(27)**

तुम किस तरह अल्लाह का कुफ़्र करते हो, और तुम बेजान थे सो उस ने तुम्हें ज़िन्दगी बख़्शी, फिर वह तुम्हें मारेगा फिर तुम्हें जिलाएगा फिर उस की तरफ़ लौटाए जाओगे। **(28)**

वही है जिस ने तुम्हारे लिए पैदा किया जो ज़मीन में है सब का सब, फिर उस ने आस्मान की तरफ़ क़स्द किया, फिर उन को ठीक बना दिया सात आस्मान, और वह हर चीज़ का जानने वाला है। **(29)**

وَاِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلٰٓئِكَةِ اِنِّىْ جَاعِلٌ فِى الْاَرْضِ خَلِيْفَةً ؕ قَالُوْٓا

उन्हों ने कहा	एक नाइब	ज़मीन	में	बनाने वाला	कि मैं	फ़रिश्तों से	तुम्हारा रब	कहा	और जब

اَتَجْعَلُ فِيْهَا مَنْ يُّفْسِدُ فِيْهَا وَيَسْفِكُ الدِّمَآءَ ۚ وَنَحْنُ نُسَبِّحُ

बे ऐब कहते हैं	और हम	ख़ून	और बहाएगा	उस में	फ़साद करेगा	जो	उस में	क्या तू बनाएगा

بِحَمْدِكَ وَنُقَدِّسُ لَكَ ؕ قَالَ اِنِّىْٓ اَعْلَمُ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٣٠﴾ وَعَلَّمَ

और सिखाए	30	तुम नहीं जानते	जो	जानता हूँ	बेशक मैं	उस ने कहा	तेरी	और पाकीज़गी बयान करते हैं	तेरी तारीफ़ के साथ

اٰدَمَ الْاَسْمَآءَ كُلَّهَا ثُمَّ عَرَضَهُمْ عَلَى الْمَلٰٓئِكَةِ فَقَالَ اَنْۢبِـُٔوْنِىْ

मुझ को बतलाओ	फिर कहा	फ़रिश्ते	पर	उन्हें सामने किया	फिर	सब चीज़ें	नाम	आदम (अ)

بِاَسْمَآءِ هٰٓؤُلَآءِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٣١﴾ قَالُوْا سُبْحٰنَكَ لَا عِلْمَ لَنَآ

हमें	इल्म नहीं	तू पाक है	उन्हों ने कहा	31	सच्चे	तुम हो	अगर	इन	नाम

اِلَّا مَا عَلَّمْتَنَا ؕ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ ﴿٣٢﴾ قَالَ يٰٓاٰدَمُ اَنْۢبِئْهُمْ

उन्हें बता दे	ऐ आदम	उस ने फ़रमाया	32	हिक्मत वाला	जानने वाला	तू	बेशक तू	तू ने हमें सिखाया	जो	मगर

بِاَسْمَآئِهِمْ ۚ فَلَمَّآ اَنْۢبَاَهُمْ بِاَسْمَآئِهِمْ ۙ قَالَ اَلَمْ اَقُلْ لَّكُمْ اِنِّىْٓ اَعْلَمُ

जानता हूँ	कि मैं	तुम्हें	मैं ने कहा	क्या नहीं	उस ने फ़रमाया	उन के नाम	उस ने उन्हें बतलाए	सो जब	उन के नाम

غَيْبَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۙ وَاَعْلَمُ مَا تُبْدُوْنَ وَمَا كُنْتُمْ تَكْتُمُوْنَ ﴿٣٣﴾

33	छुपाते हो	तुम	और जो	तुम ज़ाहिर करते हो	जो	और मैं जानता हूँ	और ज़मीन	आस्मान (जमा)	छुपी हुई बातें

وَاِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ ؕ

इब्लीस	सिवाए	तो उन्हों ने सिज्दा किया	आदम को	तुम सिज्दा करो	फ़रिश्तों को	हम ने कहा	और जब

اَبٰى وَاسْتَكْبَرَ وَكَانَ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٣٤﴾ وَقُلْنَا يٰٓاٰدَمُ اسْكُنْ اَنْتَ

तुम	तुम रहो	ऐ आदम	और हम ने कहा	34	काफ़िर	से	और हो गया	उस ने इन्कार किया और तकब्बुर किया

وَزَوْجُكَ الْجَنَّةَ وَكُلَا مِنْهَا رَغَدًا حَيْثُ شِئْتُمَا ۪ وَلَا تَقْرَبَا

क़रीब जाना	और न	तुम चाहो	जहां	इत्मिनान से	उस से	और तुम दोनों खाओ	जन्नत	और तुम्हारी बीवी

هٰذِهِ الشَّجَرَةَ فَتَكُوْنَا مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٣٥﴾ فَاَزَلَّهُمَا الشَّيْطٰنُ

शैतान	फिर उन दोनों को फुसलाया	35	ज़ालिम (जमा)	से	फिर तुम हो जाओगे	दरख़्त	इस

عَنْهَا فَاَخْرَجَهُمَا مِمَّا كَانَا فِيْهِ ۪ وَقُلْنَا اهْبِطُوْا بَعْضُكُمْ

तुम्हारे बाज़	तुम उतर जाओ	और हम ने कहा	उस में	वह थे	से जो	फिर उन्हें निकलवा दिया	उस से

لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ۚ وَلَكُمْ فِى الْاَرْضِ مُسْتَقَرٌّ وَّمَتَاعٌ اِلٰى حِيْنٍ ﴿٣٦﴾ فَتَلَقّٰٓى

फिर हासिल कर लिए	36	वक़्त	तक	और सामान	ठिकाना	ज़मीन	में	और तुम्हारे लिए	दुश्मन	बाज़ के

اٰدَمُ مِنْ رَّبِّهٖ كَلِمٰتٍ فَتَابَ عَلَيْهِ ؕ اِنَّهٗ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ﴿٣٧﴾

37	रहम करने वाला	तौबा क़ुबूल करने वाला	वह	बेशक वह	उस की	फिर उस ने तौबा क़ुबूल की	कुछ कलिमात	अपना रब	से	आदम

और जब तुम्हारे रब ने फ़रिश्तों से कहा कि मैं ज़मीन में एक नाइब बनाने वाला हूँ, उन्हों ने कहा क्या तू उस में बनाएगा जो उस में फ़साद करेगा और ख़ून बहाएगा? और हम तेरी तारीफ़ के साथ तुझ को बे ऐब कहते हैं और तेरी पाकीज़गी बयान करते हैं, उस ने कहा बेशक मैं जानता हूँ जो तुम नहीं जानते। (30)

और उस ने आदम (अ) को सब चीज़ों के नाम सिखाए, फिर उन्हें फ़रिश्तों के सामने किया, फिर कहा मुझ को उन के नाम बतलाओ अगर तुम सच्चे हो। (31)

उन्हों ने कहा, तू पाक है, हमें कोई इल्म नहीं मगर (सिर्फ़ वह) जो तू ने हमें सिखा दिया, बेशक तू ही जानने वाला हिक्मत वाला है। (32)

उस ने फ़रमाया ऐ आदम! उन्हें उन के नाम बतला दे, सो जब उस ने उन के नाम बतलाए उस ने फ़रमाया क्या मैं ने नहीं कहा था कि मैं जानता हूँ छुपी हुई बातें आस्मानों और ज़मीन की और मैं जानता हूँ जो तुम ज़ाहिर करते हो और जो तुम छुपाते हो। (33)

और जब हम ने फ़रिश्तों को कहा तुम आदम को सिज्दा करो तो इब्लीस के सिवाए उन्हों ने सिज्दा किया, उस ने इन्कार किया और तकब्बुर किया और वह काफ़िरों में से हो गया। (34)

और हम ने कहा ऐ आदम! तुम रहो और तुम्हारी बीवी जन्नत में, और तुम दोनों उस में से खाओ जहां से चाहो इत्मिनान से, और न क़रीब जाना उस दरख़्त के (वरना) तुम हो जाओगे ज़ालिमों में से। (35)

फिर शैतान ने उन दोनों को फुसलाया उस से। फिर उन्हें निकलवा दिया उस हालत से जिस में वह थे, और हम ने कहा तुम उतर जाओ, तुम्हारे बाज़, बाज़ के दुश्मन हैं, और तुम्हारे लिए ज़मीन में ठिकाना है और एक वक़्त तक सामाने (ज़िन्दगी) है। (36)

फिर आदम (अ) ने हासिल कर लिए अपने रब से कुछ कलिमात, फिर उस ने उस (आदम) की तौबा क़ुबूल की, बेशक वह तौबा क़ुबूल करने वाला रहम करने वाला है। (37)

हम ने कहा तुम सब यहां से उतर जाओ, पस जब तुम्हें मेरी तरफ़ से कोई हिदायत पहुँचे, सो जो चला मेरी हिदायत पर, न उन पर कोई ख़ौफ़ होगा न वह ग़मगीन होंगे। (38)

और जिन लोगों ने कुफ़्र किया और झुटलाया हमारी आयतों को, वही दोज़ख़ वाले हैं, वह हमेशा उस में रहेंगे। (39)

ऐ बनी इस्राईल (औलादे याक़ूब)! मेरी नेमत याद करो जो मैं ने तुम्हें बख़्शी और पूरा करो मेरे साथ किया गया अ़हद, मैं तुम्हारे साथ किया गया अ़हद पूरा करूँगा, और मुझ ही से डरो। (40)

और उस पर ईमान लाओ जो मैं ने नाज़िल किया, उस की तस्दीक़ करने वाला जो तुम्हारे पास है, और सब से पहले उस के काफ़िर न हो जाओ और मेरी आयात के इवज़ थोड़ी क़ीमत न लो, और मुझ ही से डरो। (41)

और न मिलाओ हक़ को बातिल से, और हक़ को न छुपाओ जब कि तुम जानते हो। (42)

और तुम क़ाइम करो नमाज़ और अदा करो ज़कात और रुकूअ़ करो रुकूअ़ करने वालों के साथ। (43)

क्या तुम लोगों को नेकी का हुक्म देते हो और अपने आप को भूल जाते हो? हालांकि तुम पढ़ते हो किताब, क्या फिर तुम समझते नहीं? (44)

और तुम मदद हासिल करो सब्र और नमाज़ से, और वह बड़ी (दुशवार) है मगर आ़जिज़ी करने वालों पर (नहीं) (45)

वह जो समझते हैं कि वह अपने रब के रूबरू होने वाले हैं और यह कि वह उस की तरफ़ लौटने वाले हैं। (46)

ऐ बनी इस्राईल (औलादे याक़ूब)! तुम मेरी नेमत याद करो जो मैं ने तुम्हें बख़्शी और यह कि मैं ने तुम्हें फ़ज़ीलत दी ज़माने वालों पर। (47)

और उस दिन से डरो जिस दिन कोई शख़्स किसी का कुछ बदला न बनेगा, और न उस से कोई सिफ़ारिश क़ुबूल की जाएगी, और न उस से कोई मुआ़वज़ा लिया जाएगा, और न उन की मदद की जाएगी। (48)

قُلْنَا اهْبِطُوْا مِنْهَا جَمِيْعًا ۚ فَاِمَّا يَاْتِيَنَّكُمْ مِّنِّىْ هُدًى فَمَنْ تَبِعَ

चला	सो जो	कोई हिदायत	मेरी तरफ़ से	तुम्हें पहुँचे	पस जब	सब	यहां से	तुम उतर जाओ	हम ने कहा

هُدَاىَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٣٨﴾ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا

कुफ़्र किया	और जिन लोगों ने	38	ग़मगीन होंगे	वह	और न	उन पर	कोई ख़ौफ़	तो न	मेरी हिदायत

وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَآ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٣٩﴾ (ع)

39	हमेशा रहेंगे	उस में	वह	दोज़ख़ वाले	वही	हमारी आयात	और झुटलाया

يٰبَنِىْٓ اِسْرَآءِيْلَ اذْكُرُوْا نِعْمَتِىَ الَّتِىْٓ اَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَاَوْفُوْا

और पूरा करो	तुम्हें	मैं ने बख़्शी	जो	मेरी नेमत	तुम याद करो	याक़ूब	ऐ औलाद

بِعَهْدِىْٓ اُوْفِ بِعَهْدِكُمْ ۚ وَاِيَّاىَ فَارْهَبُوْنِ ﴿٤٠﴾ وَاٰمِنُوْا بِمَآ

उस पर जो	और तुम ईमान लाओ	40	डरो	और मुझ ही से	तुम्हारे साथ किया गया अ़हद	मैं पूरा करूँगा	मेरे साथ किया गया अ़हद

اَنْزَلْتُ مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَكُمْ وَلَا تَكُوْنُوْٓا اَوَّلَ كَافِرٍۢ بِهٖ ۖ وَلَا تَشْتَرُوْا

इवज़ लो	और न	उस के	काफ़िर	पहले	हो जाओ	और न	तुम्हारे पास	उस की जो	तस्दीक़ करने वाला	मैं ने नाज़िल किया

بِاٰيٰتِىْ ثَمَنًا قَلِيْلًا ۡ وَّاِيَّاىَ فَاتَّقُوْنِ ﴿٤١﴾ وَلَا تَلْبِسُوا الْحَقَّ بِالْبَاطِلِ

बातिल से	हक़	मिलाओ	और न	41	डरो	और मुझ ही से	थोड़ी	क़ीमत	मेरी आयात

وَتَكْتُمُوا الْحَقَّ وَاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٤٢﴾ وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ

ज़कात	और अदा करो	नमाज़	और क़ाइम करो	42	जानते हो	जब कि तुम	हक़	और न छुपाओ

وَارْكَعُوْا مَعَ الرّٰكِعِيْنَ ﴿٤٣﴾ اَتَاْمُرُوْنَ النَّاسَ بِالْبِرِّ وَتَنْسَوْنَ

और तुम भूल जाते हो	नेकी का	लोग	क्या तुम हुक्म देते हो	43	रुकूअ़ करने वाले	साथ	और रुकूअ़ करो

اَنْفُسَكُمْ وَاَنْتُمْ تَتْلُوْنَ الْكِتٰبَ ۭ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿٤٤﴾ وَاسْتَعِيْنُوْا بِالصَّبْرِ

सब्र से	और तुम मदद हासिल करो	44	तुम समझते	क्या फिर नहीं	किताब	पढ़ते हो	हालांकि तुम	अपने आप

وَالصَّلٰوةِ ۭ وَاِنَّهَا لَكَبِيْرَةٌ اِلَّا عَلَى الْخٰشِعِيْنَ ﴿٤٥﴾ الَّذِيْنَ يَظُنُّوْنَ

समझते हैं	वह जो	45	आ़जिज़ी करने वाले	पर	मगर	बड़ी (दुशवार)	और वह	और नमाज़

اَنَّهُمْ مُّلٰقُوْا رَبِّهِمْ وَاَنَّهُمْ اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ ﴿٤٦﴾ يٰبَنِىْٓ اِسْرَآءِيْلَ (ع)

याक़ूब	ऐ औलादे	46	लौटने वाले	उस की तरफ़	और यह कि वह	अपना रब	रूबरू होने वाले	कि वह

اذْكُرُوْا نِعْمَتِىَ الَّتِىْٓ اَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَاَنِّىْ فَضَّلْتُكُمْ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿٤٧﴾

47	ज़माने वाले	पर	तुम्हें फ़ज़ीलत दी	और यह कि मैं ने	तुम पर	मैं ने बख़्शी	जो	मेरी नेमत	तुम याद करो

وَاتَّقُوْا يَوْمًا لَّا تَجْزِىْ نَفْسٌ عَنْ نَّفْسٍ شَيْـًٔا وَّلَا يُقْبَلُ

क़ुबूल की जाएगी	और न	कुछ	किसी	से	कोई शख़्स	न बदला बनेगा	उस दिन	और डरो

مِنْهَا شَفَاعَةٌ وَّلَا يُؤْخَذُ مِنْهَا عَدْلٌ وَّلَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ ﴿٤٨﴾

48	मदद की जाएगी	उन	और न	कोई मुआ़वज़ा	उस से	लिया जाएगा	और न	कोई सिफ़ारिश	उस से

وَاِذۡ نَجَّيۡنٰكُمۡ مِّنۡ اٰلِ فِرۡعَوۡنَ يَسُوۡمُوۡنَكُمۡ سُوۡٓءَ الۡعَذَابِ

अज़ाब	बुरा	वह तुम्हें दुख देते थे	आले फ़िरऔन	से	हम नें तुम्हें रिहाई दी	और जब

يُذَبِّحُوۡنَ اَبۡنَآءَكُمۡ وَيَسۡتَحۡيُوۡنَ نِسَآءَكُمۡ ؕ وَفِىۡ ذٰلِكُمۡ بَلَآءٌ مِّنۡ

से	आज़माइश	उस	और में	तुम्हारी औरतें	और ज़िन्दा छोड़ देते थे	तुम्हारे बेटे	वह ज़ुबह करते थे

رَّبِّكُمۡ عَظِيۡمٌ ﴿٤٩﴾ وَاِذۡ فَرَقۡنَا بِكُمُ الۡبَحۡرَ فَاَنۡجَيۡنٰكُمۡ وَاَغۡرَقۡنَآ

और हम ने डुबो दिया	फिर तुम्हें बचा लिया	दर्या	तुम्हारे लिए	हम ने फाड़ दिया	और जब	49	बड़ी	तुम्हारा रब

اٰلَ فِرۡعَوۡنَ وَاَنۡتُمۡ تَنۡظُرُوۡنَ ﴿٥٠﴾ وَاِذۡ وٰعَدۡنَا مُوۡسٰٓى اَرۡبَعِيۡنَ لَيۡلَةً

रात	चालीस	मूसा (अ)	हम ने वादा किया	और जब	50	देख रहे थे	और तुम	आले फ़िरऔन

ثُمَّ اتَّخَذۡتُمُ الۡعِجۡلَ مِنۡۢ بَعۡدِهٖ وَاَنۡتُمۡ ظٰلِمُوۡنَ ﴿٥١﴾ ثُمَّ عَفَوۡنَا

हम ने माफ़ कर दिया	फिर	51	ज़ालिम (जमा)	और तुम	उन के बाद	बछड़ा	तुम ने बना लिया	फिर

عَنۡكُمۡ مِّنۡۢ بَعۡدِ ذٰلِكَ لَعَلَّكُمۡ تَشۡكُرُوۡنَ ﴿٥٢﴾ وَاِذۡ اٰتَيۡنَا مُوۡسَى

मूसा (अ)	हम ने दी	और जब	52	एहसान मानो	ताकि तुम	यह	उस के बाद	तुम से

الۡكِتٰبَ وَالۡفُرۡقَانَ لَعَلَّكُمۡ تَهۡتَدُوۡنَ ﴿٥٣﴾ وَاِذۡ قَالَ مُوۡسٰى لِقَوۡمِهٖ

अपनी क़ौम से	मूसा	कहा	और जब	53	हिदायत पा लो	ताकि तुम	और कसौटी	किताब

يٰقَوۡمِ اِنَّكُمۡ ظَلَمۡتُمۡ اَنۡفُسَكُمۡ بِاتِّخَاذِكُمُ الۡعِجۡلَ فَتُوۡبُوۡٓا

सो तुम रुजूअ़ करो	बछड़ा	तुम ने बना लिया	अपने ऊपर	तुम ने ज़ुल्म किया	बेशक तुम	ऐ क़ौम

اِلٰى بَارِئِكُمۡ فَاقۡتُلُوۡٓا اَنۡفُسَكُمۡ ؕ ذٰلِكُمۡ خَيۡرٌ لَّكُمۡ عِنۡدَ

नज़दीक	तुम्हारे लिए	बेहतर	यह	अपनी जानें	सो तुम हलाक करो	पैदा करने वाला	तरफ़

بَارِئِكُمۡ ؕ فَتَابَ عَلَيۡكُمۡ ؕ اِنَّهٗ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيۡمُ ﴿٥٤﴾ وَاِذۡ

और जब	54	रहम करने वाला	तौबा क़ुबूल करने वाला	वह	बेशक	तुम्हारी	उस ने तौबा क़ुबूल की	तुम्हारा पैदा करने वाला

قُلۡتُمۡ يٰمُوۡسٰى لَنۡ نُّؤۡمِنَ لَكَ حَتّٰى نَرَى اللّٰهَ جَهۡرَةً فَاَخَذَتۡكُمُ

फिर तुम्हें आ लिया	खुल्लम खुल्ला	हम देख लें अल्लाह को	जब तक	तुझे	हम हरगिज़ न मानेंगे	ऐ मूसा	तुम ने कहा

الصّٰعِقَةُ وَاَنۡتُمۡ تَنۡظُرُوۡنَ ﴿٥٥﴾ ثُمَّ بَعَثۡنٰكُمۡ مِّنۡۢ بَعۡدِ مَوۡتِكُمۡ

तुम्हारी मौत	बाद	से	हम ने तुम्हें ज़िन्दा किया	फिर	55	तुम देख रहे थे	और तुम	बिजली की कड़क

لَعَلَّكُمۡ تَشۡكُرُوۡنَ ﴿٥٦﴾ وَظَلَّلۡنَا عَلَيۡكُمُ الۡغَمَامَ وَاَنۡزَلۡنَا

और हम ने उतारा	बादल	तुम पर	और हम ने साया किया	56	एहसान मानो	ताकि तुम

عَلَيۡكُمُ الۡمَنَّ وَالسَّلۡوٰى ؕ كُلُوۡا مِنۡ طَيِّبٰتِ مَا رَزَقۡنٰكُمۡ ؕ

हम ने तुम्हें दीं	जो	पाक चीज़ें	से	तुम खाओ	और सलवा	मन्न	तुम पर

وَمَا ظَلَمُوۡنَا وَلٰكِنۡ كَانُوۡٓا اَنۡفُسَهُمۡ يَظۡلِمُوۡنَ ﴿٥٧﴾

57	वह ज़ुल्म करते थे	अपनी जानें	थे	और लेकिन	उन्हों ने ज़ुल्म किया हम पर	और नहीं

और जब हम नें तुम्हें आले फ़िरऔन से रिहाई दी, वह तुम्हें दुख देते थे बुरा अ़ज़ाब। और वह तुम्हारे बेटों को ज़ुबह करते थे और तुम्हारी औ़रतों को ज़िन्दा छोड़ देते थे, और उस में तुम्हारे रब की तरफ़ से बड़ी आज़माइश थी। (49)

और जब हम नें तुम्हारे लिए फाड़ दिया दर्या, फिर हम ने तुम्हें बचा लिया और आले फ़िरऔन को डुबो दिया, और तुम देख रहे थे। (50)

और जब हम ने मूसा (अ) से चालीस रातों का वादा किया, फिर तुम ने बछड़े को उन के बाद (माबूद) बना लिया, और तुम ज़ालिम हुए। (51)

फिर हम ने तुम्हें उस के बाद माफ़ कर दिया ताकि तुम एहसान मानो। (52)

और जब हम ने मूसा को किताब दी और कसौटी (हक़ और बातिल के दरमियान फ़रक़ करने वाला) ताकि तुम हिदायत पा लो। (53)

और जब मूसा (अ) ने अपनी क़ौम से कहा, ऐ क़ौम! बेशक तुम ने अपने ऊपर ज़ुल्म किया बछड़े को (माबूद) बना कर, सो तुम अपने पैदा करने वाले की तरफ़ रुजूअ़ करो, अपनों को हलाक करो, यह तुम्हारे लिए बेहतर है तुम्हारे पैदा करने वाले के नज़दीक, सो उस ने तुम्हारी तौबा क़ुबूल कर ली, बेशक वह तौबा क़ुबूल करने वाला रह्म करने वाला है। (54)

और जब तुम ने कहा ऐ मूसा! हम तुझे हरगिज़ न मानेंगे जब तक अल्लाह को हम खुल्लम खुल्ला न देख लें, फिर तुम्हें बिजली की कड़क ने आ लिया, और तुम देख रहे थे। (55)

फिर हम ने तुम्हें तुम्हारी मौत के बाद ज़िन्दा किया ताकि तुम एहसान मानो। (56)

और हम ने तुम पर बादल का साया किया और हम ने तुम पर मन्न और सलवा उतारा, वह पाक चीज़ें खाओ जो हम ने तुम्हें दीं। और उन्हों ने हम पर ज़ुल्म नहीं किया और लेकिन वह अपनी जानों पर ज़ुल्म करते थे। (57)

وَاِذْ قُلْنَا ادْخُلُوْا هٰذِهِ الْقَرْيَةَ فَكُلُوْا مِنْهَا حَيْثُ شِئْتُمْ

तुम चाहो	जहां	उस से	फिर खाओ	बस्ती	उस	तुम दाख़िल हो	हम ने कहा	और जब

رَغَدًا وَّادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا وَّقُوْلُوْا حِطَّةٌ نَّغْفِرْ لَكُمْ

तुम्हें	हम बख़्श देंगे	बख़्शदे	और कहो	सिज्दा करते हुए	दरवाज़ा	और तुम दाख़िल हो	बाफ़राग़त

خَطٰيٰكُمْ ؕ وَسَنَزِيْدُ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٥٨﴾ فَبَدَّلَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا قَوْلًا

बात	जिन लोगों ने ज़ुल्म किया (ज़ालिम)	फिर बदल डाला	58	नेकी करने वाले	और अ़नक़रीब ज़ियादा देंगे	तुम्हारी ख़ताएं

غَيْرَ الَّذِىْ قِيْلَ لَهُمْ فَاَنْزَلْنَا عَلَى الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا رِجْزًا

अ़ज़ाब	जिन लोगों ने ज़ुल्म किया (ज़ालिम)	पर	फिर हम ने उतारा	उन्हें	कही गई	वह जो कि	दूसरी

مِّنَ السَّمَآءِ بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ﴿٥٩﴾ ع وَاِذِ اسْتَسْقٰى مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ

ع ٦ ١٣ ٦

अपनी क़ौम के लिए	मूसा (अ)	पानी मांगा	और जब	59	वह नाफ़रमानी करते थे	क्योंकि	आस्मान	से

فَقُلْنَا اضْرِبْ بِّعَصَاكَ الْحَجَرَ ؕ فَانْفَجَرَتْ مِنْهُ اثْنَتَا عَشْرَةَ عَيْنًا ؕ

चश्मे	बारह	उस से	तो फूट पड़े	पत्थर	अपना अ़सा	मारो	फिर हम ने कहा

قَدْ عَلِمَ كُلُّ اُنَاسٍ مَّشْرَبَهُمْ ؕ كُلُوْا وَاشْرَبُوْا مِنْ رِّزْقِ اللّٰهِ

अल्लाह के दिये हुए रिज़्क़ से	और पियो	तुम खाओ	अपना घाट	हर क़ौम	जान लिया

وَلَا تَعْثَوْا فِى الْاَرْضِ مُفْسِدِيْنَ ﴿٦٠﴾ وَاِذْ قُلْتُمْ يٰمُوْسٰى

ऐ मूसा	तुम ने कहा	और जब	60	फ़साद मचाते	ज़मीन	में	और न फिरो

لَنْ نَّصْبِرَ عَلٰى طَعَامٍ وَّاحِدٍ فَادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُخْرِجْ لَنَا مِمَّا

उस से जो	निकाले हमारे लिए	अपना रब	हमारे लिए	दुआ करें	एक	खाना	पर	हरगिज़ न सब्र करेंगे

تُنْۢبِتُ الْاَرْضُ مِنْۢ بَقْلِهَا وَقِثَّآئِهَا وَفُوْمِهَا وَعَدَسِهَا

और मसूर	और गन्दुम	और ककड़ी	तरकारी	से (कुछ)	ज़मीन	उगाती है

وَبَصَلِهَا ؕ قَالَ اَتَسْتَبْدِلُوْنَ الَّذِىْ هُوَ اَدْنٰى بِالَّذِىْ هُوَ خَيْرٌ ؕ

बेहतर	वह	उस से जो	वह अदना	जो कि	क्या तुम बदलना चाहते हो	उस ने कहा	और प्याज़

اِهْبِطُوْا مِصْرًا فَاِنَّ لَكُمْ مَّا سَاَلْتُمْ ؕ وَضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الذِّلَّةُ

ज़िल्लत	उन पर	और डालदी गई	जो तुम मांगते हो	तुम्हारे लिए	पस बेशक	शहर	तुम उतरो

وَالْمَسْكَنَةُ وَبَآءُوْ بِغَضَبٍ مِّنَ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ

इस लिए कि वह	यह	अल्लाह	से	ग़ज़ब के साथ	और वह लौटे	और मोहताजी

كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَيَقْتُلُوْنَ النَّبِيّٖنَ

नबियों को	और क़त्ल करते थे	अल्लाह की आयतों का	वह इन्कार करते	वह थे

بِغَيْرِ الْحَقِّ ؕ ذٰلِكَ بِمَا عَصَوْا وَّكَانُوْا يَعْتَدُوْنَ ﴿٦١﴾ ع

ع ٧ ٢ ٧

61	हद से बढ़ते	और थे	उन्हों ने नाफ़रमानी की	इस लिए कि	यह	नाहक़

और जब हम ने कहा तुम दाख़िल हो जाओ उस बस्ती में, फिर उस में जहां से चाहो बाफ़राग़त खाओ और दरवाज़े से दाख़िल हो सिज्दा करते हुए, और कहो बख़्श दे, हम तुम्हें तुम्हारी ख़ताएं बख़्श देंगे, और अ़नक़रीब ज़ियादा देंगे नेकी करने वालों को। (58)

फिर ज़ालिमों ने दूसरी बात से उस बात को बदल डाला जो कही गई थी उन्हें, फिर हम ने ज़ालिमों पर आस्मान से अ़ज़ाब उतारा, क्योंकि वह नाफ़रमानी करते थे। (59)

और जब मूसा (अ) ने अपनी क़ौम के लिए पानी मांगा, फिर हम ने कहा अपना अ़सा पत्थर पर मारो, तो फूट पड़े उस से बारह चश्मे, हर क़बीले ने अपना घाट जान लिया, तुम खाओ और पियो अल्लाह के रिज़्क़ से, और ज़मीन में न फिरो फ़साद मचाते। (60)

और जब तुम ने कहा ऐ मूसा! हम एक खाने पर हरगिज़ सब्र न करेंगे, आप हमारे लिए अपने रब से दुआ करें कि हमारे लिए निकाले जो ज़मीन उगाती है, कुछ तरकारी और ककड़ी और गन्दुम और मसूर और प्याज़। उस ने कहा क्या तुम बदलना चाहते हो? वह जो अदना है उस से जो बेहतर है, तुम शहर में उतरो बेशक तुम्हारे लिए होगा जो तुम मांगते हो, और उन पर ज़िल्लत और मोहताजी डाल दी गई, और वह लौटे अल्लाह के ग़ज़ब के साथ, यह इस लिए हुआ कि वह अल्लाह की आयतों का इन्कार करते थे और नाहक़ नबियों को क़त्ल करते थे, यह इस लिए हुआ कि उन्हों ने नाफ़रमानी की और वह हद से बढ़ते थे। (61)

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَالَّذِيْنَ هَادُوْا وَالنَّصٰرٰى وَالصّٰبِـِٕيْنَ

और साबी	और नसारा	यहूदी हुए	और जो लोग	ईमान लाए	बेशक जो लोग

مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَهُمْ اَجْرُهُمْ

उन का अजर	तो उन के लिए	नेक	और अ़मल करे	और रोज़े आख़िरत	अल्लाह पर	ईमान लाए	जो

عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٦٢﴾ وَاِذْ اَخَذْنَا

हम ने लिया	और जब	62	ग़मगीन होंगे	वह	और न	उन पर	कोई ख़ौफ़	और न	उन का रब	पास

مِيْثَاقَكُمْ وَرَفَعْنَا فَوْقَكُمُ الطُّوْرَ ؕ خُذُوْا مَآ اٰتَيْنٰكُمْ بِقُوَّةٍ

मज़बूती से	जो हम ने तुम्हें दिया	पकड़ो	कोहे तूर	तुम्हारे ऊपर	और हम ने उठाया	तुम से इक़रार

وَّاذْكُرُوْا مَا فِيْهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ﴿٦٣﴾ ثُمَّ تَوَلَّيْتُمْ مِّنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ ۚ

उस	बाद	तुम फिर गए	फिर	63	परहेज़गार हो जाओ	ताकि तुम	उस में	जो	और याद रखो

فَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ لَكُنْتُمْ مِّنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٦٤﴾

64	नुक़्सान उठाने वाले	से	तो तुम थे	और उस की रहमत	तुम पर	अल्लाह का फ़ज़्ल	पस अगर न

وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ الَّذِيْنَ اعْتَدَوْا مِنْكُمْ فِي السَّبْتِ فَقُلْنَا لَهُمْ

उन से	तब हम ने कहा	हफ़्ते के दिन में	तुम से	ज़ियादती की	जिन्हों ने	तुम ने जान लिया	और अलबत्ता

كُوْنُوْا قِرَدَةً خٰسِـِٕيْنَ ﴿٦٥﴾ ۚ فَجَعَلْنٰهَا نَكَالًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهَا

सामने वालों के लिए	इब्रत	फिर हम ने उसे बनाया	65	ज़लील	बन्दर	तुम हो जाओ

وَمَا خَلْفَهَا وَمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿٦٦﴾ وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهٖٓ

अपनी क़ौम से	मूसा (अ)	कहा	और जब	66	परहेज़गारों के लिए	और नसीहत	उस के पीछे	और जो

اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُكُمْ اَنْ تَذْبَحُوْا بَقَرَةً ؕ قَالُوْٓا اَتَتَّخِذُنَا هُزُوًا ؕ

मज़ाक़	क्या तुम करते हो हम से	वह कहने लगे	एक गाय	तुम ज़ुबह करो	कि	तुम्हें हुक्म देता है	बेशक अल्लाह

قَالَ اَعُوْذُ بِاللّٰهِ اَنْ اَكُوْنَ مِنَ الْجٰهِلِيْنَ ﴿٦٧﴾ قَالُوا ادْعُ لَنَا

हमारे लिए	दुआ़ करें	उन्हों ने कहा	67	जाहिलों से	कि हो जाऊँ	अल्लाह की	मैं पनाह लेता हूँ	उस ने कहा

رَبَّكَ يُبَيِّنْ لَّنَا مَا هِيَ ؕ قَالَ اِنَّهٗ يَقُوْلُ اِنَّهَا بَقَرَةٌ

गाय	कि वह	फ़रमाता है	बेशक वह	उस ने कहा	कैसी है वह	हमें	बतलाए	अपना रब

لَّا فَارِضٌ وَّلَا بِكْرٌ ؕ عَوَانٌۢ بَيْنَ ذٰلِكَ ؕ فَافْعَلُوْا مَا تُؤْمَرُوْنَ ﴿٦٨﴾

68	जो तुम्हें हुक्म दिया जाता है	पस करो	उस	दरमियान	जवान	छोटी उम्र	और न	न बूढ़ी

قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّنْ لَّنَا مَا لَوْنُهَا ؕ قَالَ اِنَّهٗ يَقُوْلُ

फ़रमाता है	बेशक वह	उस ने कहा	कैसा उस का रंग	हमें	वह बतलादे	अपना रब	हमारे लिए	दुआ़ करें	उन्हों ने कहा

اِنَّهَا بَقَرَةٌ صَفْرَآءُ ۙ فَاقِعٌ لَّوْنُهَا تَسُرُّ النّٰظِرِيْنَ ﴿٦٩﴾

69	देखने वाले	अच्छी लगती	उस का रंग	गहरा	ज़र्द रंग	एक गाय	कि वह

बेशक जो लोग ईमान लाए और जो यहूदी हुए और नसरानी और साबी, जो ईमान लाए अल्लाह पर और रोज़े आख़िरत पर और नेक अ़मल करे तो उन के लिए उन के रब के पास उन का अजर है, और उन पर न कोई ख़ौफ़ होगा और न वह ग़मगीन होंगे। (62)

और जब हम ने तुम से इक़रार लिया, और हम ने तुम्हारे ऊपर कोहे तूर उठाया, जो हम ने तुम्हें दिया है वह मज़बूती से पकड़ो, और जो उस में है उसे याद रखो ताकि तुम परहेज़गार हो जाओ। (63)

फिर उस के बाद तुम फिर गए, पस अगर अल्लाह का फ़ज़्ल न होता तुम पर और उस की रहमत तो तुम नुक़्सान उठाने वालों में से थे। (64)

और अलबत्ता तुम ने (उन लोगों को) जान लिया जिन्हों ने तुम में से हफ़्ते के दिन में ज़ियादती की, तब हम ने उन से कहा तुम ज़लील बन्दर हो जाओ। (65)

फिर हम ने उसे सामने वालों के लिए और पीछे आने वालों के लिए इब्रत बनाया और नसीहत परहेज़गारों के लिए। (66)

और जब मूसा (अ) ने अपनी क़ौम से कहा बेशक अल्लाह तुम्हें हुक्म देता है कि तुम एक गाय ज़ुबह करो, वह कहने लगे क्या तुम हम से मज़ाक़ करते हो? उस ने कहा मैं अल्लाह की पनाह लेता हूँ (इस से) कि मैं जाहिलों से हो जाऊँ। (67)

उन्हों ने कहा अपने रब से हमारे लिए दुआ़ करें कि वह हमें बतलाए वह कैसी है? उस ने कहा बेशक वह फ़रमाता है कि वह गाय न बूढ़ी है और न छोटी उम्र की, उस के दरमियान जवान है, पस तुम्हें जो हुक्म दिया जाता है करो। (68)

उन्हों ने कहा हमारे लिए दुआ़ करें अपने रब से कि वह हमें बतला दे उस का रंग कैसा है? उस ने कहा बेशक वह फ़रमाता है कि वह एक गाय है ज़र्द रंग की, उस का रंग ख़ूब गहरा है, देखने वालों को अच्छी लगती है। (69)

قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّنْ لَّنَا مَا هِيَ ۙ اِنَّ الْبَقَرَ تَشٰبَهَ عَلَيْنَا ط

हम पर	इश्तिबाह हो गया	गाय	क्योंकि	वह कैसी	हमें	वह बतला दे	अपना रब	हमारे लिए	दुआ करें	उन्हों ने कहा

وَاِنَّآ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ لَمُهْتَدُوْنَ ﴿٧٠﴾ قَالَ اِنَّهٗ يَقُوْلُ اِنَّهَا بَقَرَةٌ

एक गाय	कि वह	फ़रमाता है	बेशक वह	उस ने कहा	70	ज़रूर हिदायत पा लेंगे	अल्लाह ने चाहा	अगर	और बेशक हम

لَّا ذَلُوْلٌ تُثِيْرُ الْاَرْضَ وَلَا تَسْقِى الْحَرْثَ ۚ مُسَلَّمَةٌ لَّا شِيَةَ فِيْهَا ط

उस में	कोई दाग़	नहीं	बे ऐब	खेती	पानी देती	और न	ज़मीन	जोतती	न सधी हुई

قَالُوا الْـٰٔنَ جِئْتَ بِالْحَقِّ ط فَذَبَحُوْهَا وَمَا كَادُوْا يَفْعَلُوْنَ ﴿٧١﴾ ع ١٠ ٨

71	वह करें	और वह लगते न थे	फिर उन्हों ने ज़ुबह किया उस को	ठीक बात	तुम लाए	अब	वह बोले

وَاِذْ قَتَلْتُمْ نَفْسًا فَادّٰرَءْتُمْ فِيْهَا ط وَاللّٰهُ مُخْرِجٌ مَّا كُنْتُمْ

जो तुम थे	ज़ाहिर करने वाला	और अल्लाह	उस में	फिर तुम झगड़ने लगे	एक आदमी	तुम ने क़त्ल किया	और जब

تَكْتُمُوْنَ ﴿٧٢﴾ ج فَقُلْنَا اضْرِبُوْهُ بِبَعْضِهَا ط كَذٰلِكَ يُحْيِ اللّٰهُ الْمَوْتٰى

मुर्दे	ज़िन्दा करेगा अल्लाह	इस तरह	उस का टुकड़ा	उसे मारो	फिर हम ने कहा	72	छुपाते

وَيُرِيْكُمْ اٰيٰتِهٖ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿٧٣﴾ ثُمَّ قَسَتْ قُلُوْبُكُمْ مِّنْ بَعْدِ

बाद	तुम्हारे दिल	सख़्त हो गए	फिर	73	ग़ौर करो	ताकि तुम	अपने निशान	और तुम्हें दिखाता है

ذٰلِكَ فَهِيَ كَالْحِجَارَةِ اَوْ اَشَدُّ قَسْوَةً ط وَاِنَّ مِنَ الْحِجَارَةِ

पत्थर	से	और बेशक	सख़्त	उस से ज़ियादा	या	पत्थर जैसे	सो वह	उस

لَمَا يَتَفَجَّرُ مِنْهُ الْاَنْهٰرُ ط وَاِنَّ مِنْهَا لَمَا يَشَّقَّقُ فَيَخْرُجُ مِنْهُ

उस से	तो निकलता है	फट जाते हैं	अलबत्ता जो	उस से (बाज़)	और बेशक	नहरें	उस से	फूट निकलती हैं	अलबत्ता

الْمَآءُ ط وَاِنَّ مِنْهَا لَمَا يَهْبِطُ مِنْ خَشْيَةِ اللّٰهِ ط وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ

बेख़बर	और नहीं अल्लाह	अल्लाह का डर	से	अलबत्ता गिरता है	उस से	और बेशक	पानी

عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿٧٤﴾ اَفَتَطْمَعُوْنَ اَنْ يُّؤْمِنُوْا لَكُمْ وَقَدْ كَانَ

और था	तुम्हारे लिए	मान लेंगे	कि	क्या फिर तुम तवक़्क़ो रखते हो	74	तुम करते हो	से जो

فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ يَسْمَعُوْنَ كَلٰمَ اللّٰهِ ثُمَّ يُحَرِّفُوْنَهٗ مِنْ بَعْدِ

बाद	वह बदल डालते हैं उस को	फिर	अल्लाह का कलाम	वह सुनते हैं	उन से	एक फ़रीक़

مَا عَقَلُوْهُ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿٧٥﴾ وَاِذَا لَقُوا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قَالُوْٓا

वह कहते हैं	ईमान लाए	जो लोग	वह मिलते हैं	और जब	75	जानते हैं	और वह	जो उन्हों ने समझ लिया

اٰمَنَّا ۚ وَاِذَا خَلَا بَعْضُهُمْ اِلٰى بَعْضٍ قَالُوْٓا اَتُحَدِّثُوْنَهُمْ بِمَا

जो	क्या बतलाते हो उन्हें	कहते हैं	बाज़	पास	उन के बाज़	अकेले होते हैं	और जब	हम ईमान लाए

فَتَحَ اللّٰهُ عَلَيْكُمْ لِيُحَآجُّوْكُمْ بِهٖ عِنْدَ رَبِّكُمْ ط اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿٧٦﴾

76	तो क्या तुम नहीं समझते	तुम्हारा रब	सामने	उस के ज़रीए	ताकि वह हुज्जत लाएं तुम पर	तुम पर	ज़ाहिर किया अल्लाह ने

उन्हों ने कहा हमारे लिए अपने रब से दुआ करें वह हमें बतला दे वह कैसी है? क्योंकि गाय में हम पर इश्तिबाह हो गया, और अगर अल्लाह ने चाहा तो बेशक हम ज़रूर हिदायत पा लेंगे। (70)

उस ने कहा बेशक वह फ़रमाता है कि वह एक गाय है न सधी हो, न ज़मीन जोतती न खेती को पानी देती, बे ऐब है, उस में कोई दाग़ नहीं, वह बोले अब तुम ठीक बात लाए, फिर उन्हों ने उसे ज़ुबह किया, और वह लगते न थे कि वह (ज़ुबह) करें। (71)

और जब तुम ने एक आदमी को क़त्ल किया फिर तुम उस में झगड़ने लगे और अल्लाह ज़ाहिर करने वाला था जो तुम छुपाते थे। (72)

फिर हम ने कहा तुम उस (मक़तूल) को गाय का एक टुकड़ा मारो, इस तरह अल्लाह मुर्दों को ज़िन्दा करेगा, वह तुम्हें दिखाता है अपनी निशानियां ताकि तुम ग़ौर करो। (73)

फिर उस के बाद तुम्हारे दिल सख़्त हो गए, सो वह पत्थर जैसे हो गए या उस से ज़ियादा सख़्त, और बेशक बाज़ पत्थरों से नहरें फूट निकलती हैं, और बेशक उन में से बाज़ फट जाते हैं तो निकलता है उन से पानी, और उन में से बाज़ अल्लाह के डर से गिर पड़ते हैं, और अल्लाह उस से बेख़बर नहीं जो तुम करते हो। (74)

फिर क्या तुम तवक़्क़ो रखते हो? कि वह मान लेंगे तुम्हारी ख़ातिर, और उन में से एक फ़रीक़ अल्लाह का कलाम सुनता है फिर वह उस को बदल डालते हैं उस को समझ लेने के बाद, और वह जानते हैं। (75)

और जब वह उन लोगों से मिलते हैं जो ईमान लाए तो कहते हैं हम ईमान लाए, और जब उन के बाज़ दूसरों के पास अकेले होते हैं तो कहते हैं क्या तुम उन्हें वह बतलाते हो जो अल्लाह ने तुम पर ज़ाहिर किया ताकि वह उस के ज़रीए तुम्हारे रब के सामने हुज्जत लाएं तुम पर, तो क्या तुम नहीं समझते? (76)

أَوَلَا يَعْلَمُونَ أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّونَ وَمَا يُعْلِنُونَ ﴿٧٧﴾

77	वह ज़ाहिर करते हैं	और जो	जो वह छुपाते हैं	जानता है	कि अल्लाह	वह जानते	क्या नहीं

وَمِنْهُمْ أُمِّيُّونَ لَا يَعْلَمُونَ الْكِتَابَ إِلَّا أَمَانِيَّ وَإِنْ هُمْ إِلَّا

मगर	वह	और नहीं	आर्ज़ूएं	सिवाए	किताब	वह नहीं जानते	अनपढ़	और उन में

النصف يَظُنُّونَ ﴿٧٨﴾ فَوَيْلٌ لِّلَّذِينَ يَكْتُبُونَ الْكِتَابَ بِأَيْدِيهِمْ ثُمَّ

फिर	अपने हाथों से	किताब	लिखते हैं	उन के लिए जो	सो ख़राबी	78	गुमान से काम लेते हैं

يَقُولُونَ هَٰذَا مِنْ عِنْدِ اللَّهِ لِيَشْتَرُوا بِهِ ثَمَنًا قَلِيلًا ۖ فَوَيْلٌ

सो ख़राबी	थोड़ी	क़ीमत	उस से	ताकि वह हासिल करें	अल्लाह के पास	से	यह	वह कहते हैं

لَّهُمْ مِّمَّا كَتَبَتْ أَيْدِيهِمْ وَوَيْلٌ لَّهُمْ مِّمَّا يَكْسِبُونَ ﴿٧٩﴾ وَقَالُوا

और उन्हों ने कहा	79	वह कमाते हैं	उस से जो	उन के लिए	और ख़राबी	उन के हाथ	लिखा	उस से जो	उन के लिए

لَن تَمَسَّنَا النَّارُ إِلَّا أَيَّامًا مَّعْدُودَةً ۚ قُلْ أَتَّخَذْتُمْ عِندَ اللَّهِ

अल्लाह के पास	क्या तुम ने लिया	कह दो	चन्द	दिन	सिवाए	आग	हरगिज़ नहीं छुएगी

عَهْدًا فَلَن يُخْلِفَ اللَّهُ عَهْدَهُ أَمْ تَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ مَا لَا

जो नहीं	अल्लाह पर	तुम कहते हो	या	अपना वादा	ख़िलाफ़ करेगा अल्लाह	कि हरगिज़ न	कोई वादा

تَعْلَمُونَ ﴿٨٠﴾ بَلَىٰ مَن كَسَبَ سَيِّئَةً وَأَحَاطَتْ بِهِ خَطِيئَتُهُ

उस की ख़ताएं	उस को	और घेर लिया	कोई बुराई	कमाई	जिस ने	क्यों नहीं	80	तुम जानते

فَأُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٨١﴾ وَالَّذِينَ

और जो लोग	81	हमेशा रहेंगे	उस में	वह	आग वाले (दोज़ख़ी)	पस यही लोग

آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ ۖ هُمْ

वह	जन्नत वाले	यही लोग	अच्छे अ़मल	और उन्हों ने किए	ईमान लाए

ع ٩ ١١ ٩ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٨٢﴾ وَإِذْ أَخَذْنَا مِيثَاقَ بَنِي إِسْرَائِيلَ

बनी इस्राईल	पुख़्ता अ़हद	हम ने लिया	और जब	82	हमेशा रहेंगे	उस में

لَا تَعْبُدُونَ إِلَّا اللَّهَ ۖ وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا وَذِي الْقُرْبَىٰ

और क़रावतदार	हुस्ने सुलूक	और माँ बाप से	सिवाए अल्लाह	तुम इबादत न करना

وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسَاكِينِ وَقُولُوا لِلنَّاسِ حُسْنًا

अच्छी बात	लोगों से	और तुम कहना	और मिस्कीन (जमा)	और यतीम (जमा)

وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ ۚ ثُمَّ

फिर	ज़कात	और देना	नमाज़	और तुम क़ाइम करना

تَوَلَّيْتُمْ إِلَّا قَلِيلًا مِّنكُمْ وَأَنتُم مُّعْرِضُونَ ﴿٨٣﴾

83	फिर जाने वाले	और तुम	तुम में से	चन्द एक	सिवाए	तुम फिर गए

क्या वह नहीं जानते कि अल्लाह जानता है जो वह छुपाते हैं और जो वह ज़ाहिर करते हैं। (77)

और उन में कुछ अनपढ़ हैं जो किताब नहीं जानते सिवाए चन्द आर्ज़ूओं के, और वह सिर्फ़ गुमान से काम लेते हैं। (78)

सो उन के लिए ख़राबी है जो वह किताब लिखते हैं अपने हाथों से, फिर कहते हैं यह अल्लाह के पास से है ताकि उस के ज़रीए हासिल कर लें थोड़ी सी क़ीमत, सो उन के लिए ख़राबी है उस से जो उन के हाथों ने लिखा, और उन के लिए ख़राबी है उस से जो वह कमाते हैं। (79)

और उन्हों ने कहा कि हमें आग हरगिज़ न छुएगी सिवाए गिनती के चन्द दिन, कह दो, क्या तुम ने अल्लाह के पास से कोई वादा लिया है कि अल्लाह हरगिज़ अपने वादे के ख़िलाफ़ नहीं करेगा या तुम अल्लाह पर वह कहते हो जो तुम नहीं जानते? (80)

क्यों नहीं! जिस ने कमाई कोई बुराई और उस को उस की ख़ताओं ने घेर लिया पस यही लोग दोज़ख़ी हैं, वह उस में हमेशा रहेंगे। (81)

और जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने अच्छे अ़मल किए यही लोग जन्नत वाले हैं, वह उस में हमेशा रहेंगे। (82)

और जब हम ने लिया बनी इस्राईल से पुख़्ता अ़हद कि तुम अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करना, और माँ बाप से हुस्ने सुलूक करना, और क़रावतदारों, यतीमों और मिस्कीनों से। और तुम कहना लोगों से अच्छी बात, और नमाज़ क़ाइम करना और ज़कात देना, फिर तुम फिर गए तुम में से चन्द एक के सिवा, और तुम फिर जाने वाले हो। (83)

وَاِذْ اَخَذْنَا مِيْثَاقَكُمْ لَا تَسْفِكُوْنَ دِمَآءَكُمْ وَلَا تُخْرِجُوْنَ

तुम निकालोगे	और न	अपनों के ख़ून	न तुम बहाओगे	तुम से पुख़्ता अ़हद	हम ने लिया	और जब

اَنْفُسَكُمْ مِّنْ دِيَارِكُمْ ثُمَّ اَقْرَرْتُمْ وَاَنْتُمْ تَشْهَدُوْنَ ﴿٨٤﴾

84	गवाह हो	और तुम	तुम ने इक़रार किया	फिर	अपनी बस्तियां	से	अपनों

ثُمَّ اَنْتُمْ هٰٓؤُلَآءِ تَقْتُلُوْنَ اَنْفُسَكُمْ وَتُخْرِجُوْنَ فَرِيْقًا مِّنْكُمْ

अपने से	एक फ़रीक़	और तुम निकालते हो	अपनों को	क़त्ल करते हो	वह लोग	तुम	फिर

مِّنْ دِيَارِهِمْ تَظٰهَرُوْنَ عَلَيْهِمْ بِالْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ ؕ وَاِنْ

और अगर	और सरकशी	गुनाह से	उन पर	तुम चढ़ाई करते हो	उन के वतन	से

يَّاْتُوْكُمْ اُسٰرٰى تُفٰدُوْهُمْ وَهُوَ مُحَرَّمٌ عَلَيْكُمْ اِخْرَاجُهُمْ ؕ

निकालना उन का	तुम पर	हराम किया गया	हालांकि वह	तुम बदला दे कर छुड़ाते हो उन्हें	क़ैदी	वह आएं तुम्हारे पास

اَفَتُؤْمِنُوْنَ بِبَعْضِ الْكِتٰبِ وَتَكْفُرُوْنَ بِبَعْضٍ ۚ فَمَا جَزَآءُ

सज़ा	सो क्या	बाज़ हिस्से	और इन्कार करते हो	किताब	बाज़ हिस्से	तो क्या तुम ईमान लाते हो

مَنْ يَّفْعَلُ ذٰلِكَ مِنْكُمْ اِلَّا خِزْيٌ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ

दुनिया	ज़िन्दगी	में	रुसवाई	सिवाए	तुम में से	यह	करे	जो

وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ يُرَدُّوْنَ اِلٰٓى اَشَدِّ الْعَذَابِ ؕ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا

उस से जो	बेख़बर	अल्लाह	और नहीं	सख़्त अ़ज़ाब	तरफ़	वह लौटाए जाएंगे	और क़ियामत के दिन

تَعْمَلُوْنَ ﴿٨٥﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اشْتَرَوُا الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا بِالْاٰخِرَةِ ۪

आख़िरत के बदले	दुनिया	ज़िन्दगी	ख़रीद ली	वह जिन्हों ने	यही लोग	85	तम करते हो

ع ١٠ ٤ ١٠

فَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمُ الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ ﴿٨٦﴾

86	मदद किए जाएंगे	वह	और न	अ़ज़ाब	उन से	सो हलका न किया जाएगा

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ وَقَفَّيْنَا مِنْۢ بَعْدِهٖ بِالرُّسُلِ ۪

रसूल	उस के बाद	और हम ने पै दर पै भेजे	किताब	मूसा	और अलबत्ता हम ने दी

وَاٰتَيْنَا عِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ الْبَيِّنٰتِ وَاَيَّدْنٰهُ بِرُوْحِ الْقُدُسِ ؕ

जिब्राईल (अ) के ज़रीए	और उस की मदद की	खुली निशानियां	मरयम का बेटा	ईसा (अ)	और हम ने दी

اَفَكُلَّمَا جَآءَكُمْ رَسُوْلٌۢ بِمَا لَا تَهْوٰٓى اَنْفُسُكُمُ اسْتَكْبَرْتُمْ ۚ

तुम ने तकब्बुर किया	तुम्हारे नफ़्स	न चाहते	उस के साथ जो	कोई रसूल	आया तुम्हारे पास	क्या फिर जब

فَفَرِيْقًا كَذَّبْتُمْ ۬ وَفَرِيْقًا تَقْتُلُوْنَ ﴿٨٧﴾ وَقَالُوْا قُلُوْبُنَا غُلْفٌ ؕ

पर्दे में	हमारे दिल	और उन्हों ने कहा	87	तुम क़त्ल करने लगे	और एक गिरोह	तुम ने झुटलाया	सो एक गिरोह

بَلْ لَّعَنَهُمُ اللّٰهُ بِكُفْرِهِمْ فَقَلِيْلًا مَّا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٨٨﴾

88	जो ईमान लाते हैं	सो थोड़े	उन के कुफ़्र के सबब	उन पर लानत अल्लाह की	बल्कि

और फिर जब हम ने तुम से पुख़्ता अ़हद लिया कि तुम अपनों के ख़ून न बहाओगे और न तुम अपनों को अपनी बस्तियों से निकालोगे, फिर तुम ने इक़रार किया और तुम गवाह हो। (84)

फिर तुम वह लोग हो जो क़त्ल करते हो अपनों को, और अपने एक फ़रीक़ को उन के वतन से निकालते हो, तुम चढ़ाई करते हो उन पर गुनाह और सरकशी से, और अगर वह तुम्हारे पास क़ैदी आएं तो बदला दे कर उन्हें छुड़ाते हो, हालांकि उन का निकालना तुम पर हराम किया गया था, तो क्या तुम किताब के बाज़ हिस्से पर ईमान लाते हो और बाज़ हिस्से का इन्कार करते हो? सो तुम में जो ऐसा करे उस की क्या सज़ा है? सिवाए इस के कि दुनिया की ज़िन्दगी में रुसवाई और वह क़ियामत के दिन सख़्त अ़ज़ाब की तरफ़ लौटाए जाएंगे, और जो तुम करते हो अल्लाह उस से बेख़बर नहीं। (85)

यही लोग हैं जिन्हों ने ख़रीद ली आख़िरत के बदले दुनिया की ज़िन्दगी, सो उन से अ़ज़ाब हलका न किया जाएगा, और न वह मदद किए जाएंगे। (86)

और अलबत्ता हम ने मूसा (अ) को किताब दी, और हम ने उस के बाद पै दर पै भेजे रसूल, और हम ने मरयम के बेटे ईसा (अ) को खुली निशानियां दीं और उस की मदद की जिब्राईल (अ) के ज़रीए, क्या फिर जब तुम्हारे पास कोई रसूल उस के साथ आया जो तुम्हारे नफ़्स न चाहते थे तो तुम ने तकब्बुर किया, सो एक गिरोह को तुम ने झुटलाया और एक गिरोह को तुम क़त्ल करने लगे। (87)

और उन्हों ने कहा हमारे दिल पर्दे में हैं, बल्कि उन पर उन के कुफ़्र के सबब अल्लाह की लानत है, सो थोड़े हैं जो ईमान लाते हैं। (88)

وَلَمَّا جَآءَهُمْ كِتٰبٌ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ مُصَدِّقٌ لِّمَا مَعَهُمْ ۙ

उन के पास	उस की जो	तस्दीक़ करने वाली	अल्लाह के पास	से	किताब	उन के पास आई	और जब

وَكَانُوْا مِنْ قَبْلُ يَسْتَفْتِحُوْنَ عَلَى الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۚ فَلَمَّا

सो जब	जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	पर	फ़त्ह मांगते	इस से पहले	और वह थे

جَآءَهُمْ مَّا عَرَفُوْا كَفَرُوْا بِهٖ ۚ فَلَعْنَةُ اللّٰهِ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ﴿٨٩﴾

89	काफ़िर (जमा)	पर	सो लानत अल्लाह की	उस के मुन्किर हो गए	वह पहचानते थे	जो	आया उन के पास

بِئْسَمَا اشْتَرَوْا بِهٖٓ اَنْفُسَهُمْ اَنْ يَّكْفُرُوْا بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ بَغْيًا

ज़िद	नाज़िल किया अल्लाह ने	उस से जो	वह मुन्किर हुए	कि	अपने आप	उस के बदले	बेच डाला उन्हों ने	बुरा है जो

اَنْ يُّنَزِّلَ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ۚ

अपने बन्दे	से	जो वह चाहता है	पर	अपना फ़ज़्ल	से	नाज़िल करता है अल्लाह	कि

فَبَآءُوْ بِغَضَبٍ عَلٰى غَضَبٍ ۭ وَلِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابٌ

अज़ाब	और काफ़िरों के लिए	ग़ज़ब	पर	ग़ज़ब	सो वह कमा लाए

مُّهِيْنٌ ﴿٩٠﴾ وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ اٰمِنُوْا بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ قَالُوْا

वह कहते हैं	नाज़िल किया अल्लाह ने	उस पर जो	तुम ईमान लाओ	उन्हें	और जब कहा जाता है	90	रुसवा करने वाला

نُؤْمِنُ بِمَآ اُنْزِلَ عَلَيْنَا وَيَكْفُرُوْنَ بِمَا وَرَآءَهٗ ۭ وَهُوَ الْحَقُّ

हक़	हालांकि वह	उस के अलावा	उस से जो	और इन्कार करते हैं	हम पर	नाज़िल किया गया	उस पर जो	हम ईमान लाते हैं

مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَهُمْ ۭ قُلْ فَلِمَ تَقْتُلُوْنَ اَنْۢبِيَآءَ اللّٰهِ

अल्लाह के नबी (जमा)	तुम क़त्ल करते रहे	सो क्यों	कह दें	उन के पास	उस की जो	तस्दीक़ करने वाला

مِنْ قَبْلُ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿٩١﴾ وَلَقَدْ جَآءَكُمْ

तुम्हारे पास आए	और अलबत्ता	91	मोमिन (जमा)	तुम हो	अगर	इस से पहले

مُّوْسٰى بِالْبَيِّنٰتِ ثُمَّ اتَّخَذْتُمُ الْعِجْلَ مِنْۢ بَعْدِهٖ وَاَنْتُمْ

और तुम	उस के बाद	बछड़ा	तुम ने बना लिया	फिर	खुली निशानियों के साथ	मूसा

ظٰلِمُوْنَ ﴿٩٢﴾ وَاِذْ اَخَذْنَا مِيْثَاقَكُمْ وَرَفَعْنَا فَوْقَكُمُ الطُّوْرَ ۭ

कोहे तूर	तुम्हारे ऊपर	और हम ने बुलन्द किया	तुम से पुख़्ता अ़हद	हम ने लिया	और जब	92	ज़ालिम (जमा)

خُذُوْا مَآ اٰتَيْنٰكُمْ بِقُوَّةٍ وَّاسْمَعُوْا ۭ قَالُوْا سَمِعْنَا

हम ने सुना	वह बोले	और सुनो	मज़बूती से	जो हम ने दिया तुम्हें	पकड़ो

وَعَصَيْنَا ۡ وَاُشْرِبُوْا فِيْ قُلُوْبِهِمُ الْعِجْلَ بِكُفْرِهِمْ ۭ

बसबब उन के कुफ़्र	बछड़ा	उन के दिल	में	और रचा दिया गया	और नाफ़रमानी की

قُلْ بِئْسَمَا يَاْمُرُكُمْ بِهٖٓ اِيْمَانُكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿٩٣﴾

93	मोमिन	अगर तुम हो	ईमान तुम्हारा	उस का	तुम्हें हुक्म देता है	क्या ही बुरा जो	कह दें

और जब उन के पास अल्लाह की तरफ़ से किताब आई, उस की तस्दीक़ करने वाली जो उन के पास है और वह इस से पहले काफ़िरों पर फ़त्ह मांगते थे, सो जब उन के पास वह आया जो वह पहचानते थे वह उस के मुन्किर हो गए, सो काफ़िरों पर अल्लाह की लानत। (89)

बुरा है जिस के बदले उन्हों ने अपने आप को बेच डालो कि वह उस के मुन्किर हो गए जो अल्लाह ने नाज़िल किया इस ज़िद से कि अल्लाह नाज़िल करता है अपने फ़ज़्ल से अपने जिस बन्दे पर वह चाहता है, सो कमा लाए ग़ज़ब पर ग़ज़ब, और काफ़िरों के लिए रुसवा करने वाला अ़ज़ाब है। (90)

और जब उन से कहा जाता है कि तुम ईमान लाओ उस पर जो अल्लाह ने नाज़िल किया तो कहते हैं हम उस पर ईमान लाते हैं जो हम पर नाज़िल किया गया और इन्कार करते हैं उस का जो उस के अ़लावा है, हालांकि वह हक़ है, उस की तस्दीक़ करने वाला जो उन के पास है, आप कह दें सो क्यों तुम अल्लाह के नबियों को इस से पहले क़त्ल करते रहे हो? अगर तुम मोमिन हो। (91)

और अलबत्ता मूसा (अ) तुम्हारे पास खुली निशानियों के साथ आए, फिर तुम ने उस के बाद बछड़े को (माबूद) बना लिया और तुम ज़ालिम हो। (92)

और जब हम ने तुम से पुख़्ता अ़हद लिया और तुम्हारे ऊपर कोहे तूर बुलन्द किया (और कहा) जो हम ने तुम्हें दिया है मज़बूती से पकड़ो और सुनो, तो वह बोले हम ने सुना और नाफ़रमानी की, और उन के दिलों में बछड़ा रचा दिया गया उन के कुफ़्र के सबब, कह दें क्या ही बुरा है जिस का तुम्हें हुक्म देता है तुम्हारा ईमान, अगर तुम मोमिन हो। (93)

قُلْ اِنْ كَانَتْ لَكُمُ الدَّارُ الْاٰخِرَةُ عِنْدَ اللّٰهِ خَالِصَةً

ख़ास तौर पर	अल्लाह के पास	आख़िरत का घर	तुम्हारे लिए	अगर है	कह दें

مِّنْ دُوْنِ النَّاسِ فَتَمَنَّوُا الْمَوْتَ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٩٤﴾

94	सच्चे	तुम हो	अगर	मौत	तो तुम आर्ज़ू करो	लोग	सिवाए

وَلَنْ يَّتَمَنَّوْهُ اَبَدًا ۢ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ

जानने वाला	और अल्लाह	उन के हाथ	बसबब जो आगे भेजा	कभी	और वह हरगिज़ उस की आर्ज़ू न करेंगे

بِالظّٰلِمِيْنَ ﴿٩٥﴾ وَلَتَجِدَنَّهُمْ اَحْرَصَ النَّاسِ عَلٰى حَيٰوةٍ ۛ

ज़िन्दगी पर	लोग	ज़ियादा हरीस	और अलबत्ता तुम पाओगे उन्हें	95	ज़ालिमों को

وَمِنَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا ۛ يَوَدُّ اَحَدُهُمْ لَوْ يُعَمَّرُ اَلْفَ سَنَةٍ ۚ

साल	हज़ार	काश वह उम्र पाए	उन का हर एक	चाहता है	जिन लोगों ने शिर्क किया (मुश्रिक)	और से

وَمَا هُوَ بِمُزَحْزِحِهٖ مِنَ الْعَذَابِ اَنْ يُّعَمَّرَ ؕ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِمَا

जो	देखने वाला	और अल्लाह	कि वह उम्र दिया जाए	अज़ाब	से	उसे दूर करने वाला	और वह नहीं

يَعْمَلُوْنَ ﴿٩٦﴾ ع قُلْ مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِّجِبْرِيْلَ فَاِنَّهٗ نَزَّلَهٗ

यह नाज़िल किया	तो बेशक उस ने	जिब्रील का	दुश्मन	हो	जो	कह दें	96	वह करते हैं

عَلٰى قَلْبِكَ بِاِذْنِ اللّٰهِ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ وَهُدًى

और हिदायत	इस से पहले	उस की जो	तस्दीक़ करने वाला	अल्लाह के हुक्म से	तेरे दिल पर

وَّبُشْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٩٧﴾ مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِّلّٰهِ وَمَلٰٓئِكَتِهٖ

और उस के फ़रिश्ते	अल्लाह का	दुश्मन	हो	जो	97	ईमान वालों के लिए	और ख़ुशख़बरी

وَرُسُلِهٖ وَجِبْرِيْلَ وَمِيْكٰلَ فَاِنَّ اللّٰهَ عَدُوٌّ لِّلْكٰفِرِيْنَ ﴿٩٨﴾

98	काफ़िरों का	दुश्मन	तो बेशक अल्लाह	और मिकाईल	और जिब्रील	और उस के रसूल

وَلَقَدْ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ اٰيٰتٍۢ بَيِّنٰتٍ ۚ وَمَا يَكْفُرُ بِهَآ

उस का	और नहीं इन्कार करते	निशानियां वाज़ेह	आप की तरफ़	हम ने उतारी	और अलबत्ता

اِلَّا الْفٰسِقُوْنَ ﴿٩٩﴾ اَوَ كُلَّمَا عٰهَدُوْا عَهْدًا نَّبَذَهٗ فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ ؕ

उन में से	एक फ़रीक़	तोड़ दिया उस को	कोई अहद	उन्हों ने अहद किया	क्या जब भी	99	नाफ़रमान	मगर

بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٠٠﴾ وَلَمَّا جَآءَهُمْ رَسُوْلٌ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ

अल्लाह की तरफ़ से	एक रसूल	आया उन के पास	और जब	100	ईमान नहीं रखते	अक्सर उन के	बल्कि

مُصَدِّقٌ لِّمَا مَعَهُمْ نَبَذَ فَرِيْقٌ مِّنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ ۙ

किताब दी गई (अहले किताब)	जिन्हें	से	एक फ़रीक़	फेंक दिया	उन के पास	उस की जो	तस्दीक़ करने वाला

كِتٰبَ اللّٰهِ وَرَآءَ ظُهُوْرِهِمْ كَاَنَّهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿١٠١﴾

101	जानते नहीं	गोया कि वह	अपनी पीठ	पीछे	अल्लाह की किताब

कह दें अगर तुम्हारे लिए है आख़िरत का घर अल्लाह के पास ख़ास तौर पर दूसरे लोगों के सिवा, तो तुम मौत की आर्ज़ू करो अगर तुम सच्चे हो। (94)

और वह हरगिज़ कभी मौत की आर्ज़ू न करेंगे उस के सबब जो उन के हाथों ने आगे भेजा, और अल्लाह ज़ालिमों को जानने वाला है। (95)

और अलबत्ता तुम उन्हें दूसरे लोगों से ज़ियादा ज़िन्दगी पर हरीस पाओगे, और मुश्रिकों से (भी ज़ियादा), उन में से हर एक चाहता है काश वह हज़ार साल की उम्र पाए, और इतनी उम्र दिया जाना उसे अज़ाब से दूर करने वाला नहीं, और अल्लाह देखने वाला है जो वह करते हैं। (96)

कह दें जो जिब्रील (अ) का दुश्मन हो तो बेशक उस ने यह आप के दिल पर नाज़िल किया है अल्लाह के हुक्म से, उस की तस्दीक़ करने वाला जो इस से पहले है, और हिदायत और ख़ुशख़बरी ईमान वालों के लिए। (97)

जो दुश्मन हो अल्लाह का और उस के फ़रिश्तों और उस के रसूलों का और जिब्रील और मिकाईल का, तो बेशक अल्लाह काफ़िरों का दुश्मन है। (98)

और अलबत्ता हम ने आप (स) की तरफ़ वाज़ेह निशानियां उतारीं और उन का इन्कार सिर्फ़ नाफ़रमान करते हैं। (99)

क्या (ऐसा नहीं) जब भी उन्हों ने कोई अहद किया तो उस को तोड़ दिया उन में से एक फ़रीक़ ने, बल्कि उन के अक्सर ईमान नहीं रखते। (100)

और जब उन के पास एक रसूल आया अल्लाह की तरफ़ से, उस की तस्दीक़ करने वाला जो उन के पास है, तो फेंक दिया एक फ़रीक़ ने अहले किताब के, अल्लाह की किताब को अपनी पीठ पीछे, गोया कि वह जानते ही नहीं। (101)

معانقة ٢ عند المتأخرين

ع ١١ ١٠ ١١

وَاتَّبَعُوْا مَا تَتْلُوا الشَّيٰطِيْنُ عَلٰى مُلْكِ سُلَيْمٰنَ ۚ وَمَا كَفَرَ

और कुफ़्र न किया	सुलेमान (अ)	बादशाहत	में	शैतान	पढ़ते थे	जो	और उन्हों ने पैरवी की

سُلَيْمٰنُ وَلٰكِنَّ الشَّيٰطِيْنَ كَفَرُوْا يُعَلِّمُوْنَ النَّاسَ السِّحْرَ ۗ

जादू	लोग	वह सिखाते	कुफ़्र किया	शैतान (जमा)	लेकिन	सुलेमान (अ)

وَمَآ اُنْزِلَ عَلَى الْمَلَكَيْنِ بِبَابِلَ هَارُوْتَ وَمَارُوْتَ ۭ

और मारूत	हारूत	बाबिल में	दो फ़रिश्ते	पर	और जो नाज़िल किया गया

وَمَا يُعَلِّمٰنِ مِنْ اَحَدٍ حَتّٰى يَقُوْلَآ اِنَّمَا نَحْنُ فِتْنَةٌ فَلَا تَكْفُرْ ۭ

पस तू कुफ़्र न कर	आज़माइश	हम	सिर्फ़	वह कह देते	यहां तक	किसी को	और वह न सिखाते

فَيَتَعَلَّمُوْنَ مِنْهُمَا مَا يُفَرِّقُوْنَ بِهٖ بَيْنَ الْمَرْءِ وَزَوْجِهٖ ۭ

और उस की बीवी	ख़ाविन्द	दरमियान	उस से	जिस से जुदाई डालते	उन दोनों से	सो वह सीखते

وَمَا هُمْ بِضَاۗرِّيْنَ بِهٖ مِنْ اَحَدٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ۭ

अल्लाह	हुक्म से	मगर	किसी को	उस से	नुक़्सान पहुँचाने वाले	और वह नहीं

وَيَتَعَلَّمُوْنَ مَا يَضُرُّهُمْ وَلَا يَنْفَعُهُمْ ۭ وَلَقَدْ عَلِمُوْا

और वह जान चुके	उन्हें नफ़ा दे	और न	जो उन्हें नुक़्सान पहुँचाए	और वह सीखते हैं

لَمَنِ اشْتَرٰىهُ مَا لَهٗ فِي الْاٰخِرَةِ مِنْ خَلَاقٍ ڐ وَلَبِئْسَ

और अलबत्ता बुरा	कोई हिस्सा	आख़िरत में	नहीं उस के लिए	यह ख़रीदा	जिस ने

مَا شَرَوْا بِهٖٓ اَنْفُسَهُمْ ۭ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ١٠٢ وَلَوْ اَنَّهُمْ

वह	और अगर	102	वह जानते होते	काश	अपने आप को	उस से	जो उन्हों ने बेच दिया

اٰمَنُوْا وَاتَّقَوْا لَمَثُوْبَةٌ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ خَيْرٌ ۭ

बेहतर	अल्लाह के पास	से	तो ठिकाना पाते	और परहेज़गार बन जाते	वह ईमान लाते

ع ١٢ ١٢ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ١٠٣ ۧ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَقُوْلُوْا رَاعِنَا

राइना	न कहो	ईमान लाए	वह लोग जो	ऐ	103	काश वह जानते होते

وَقُوْلُوا انْظُرْنَا وَاسْمَعُوْا ۭ وَلِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ١٠٤

104	दर्दनाक	अ़ज़ाब	और काफ़िरों के लिए	और सुनो	उनज़ुरना	और कहो

مَا يَوَدُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ وَلَا الْمُشْرِكِيْنَ

मुश्रिक (जमा)	और न	अहले किताब	से	कुफ़्र किया	जिन लोगों ने	नहीं चाहते

اَنْ يُّنَزَّلَ عَلَيْكُمْ مِّنْ خَيْرٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ ۭ وَاللّٰهُ يَخْتَصُّ

ख़ास कर लेता है	और अल्लाह	तुम्हारा रब	से	भलाई	से	तुम पर	नाज़िल की जाए	कि

بِرَحْمَتِهٖ مَنْ يَّشَاۗءُ ۭ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ١٠٥

105	बड़ा	फ़ज़्ल वाला	और अल्लाह	जिसे चाहता है	अपनी रहमत से

और उन्हों ने उस की पैरवी की जो शैतान सुलेमान (अ) की बादशाहत में पढ़ते थे। और कुफ़्र नहीं किया सुलेमान (अ) ने लेकिन शैतानों ने कुफ़्र किया, वह लोगों को जादू सिखाते, और जो बाबिल में हारूत और मारूत दो फ़रिश्तों पर नाज़िल किया गया, और वह न सिखाते किसी को यहां तक कि कह देते हम तो सिर्फ़ आज़माइश हैं पस तू कुफ़्र न कर, सो वह सीखते उन दोनों से वह कुछ जिस से ख़ाविन्द और उस की बीवी के दरमियान जुदाई डालते, और वह नुक़्सान पहुँचाने वाले नहीं उस से किसी को मगर अल्लाह के हुक्म से, और वह सीखते जो उन्हें नुक़्सान पहुँचाए और उन्हें नफ़ा न दे, और अलबत्ता वह जान चुके थे कि जिस ने यह ख़रीदा उस के लिए आख़िरत में कोई हिस्सा नहीं, और अलबत्ता बुरा है जिस के बदले उन्हों ने अपने आप को बेच दिया। काश वह जानते होते। **(102)**

और अगर वह ईमान ले आते और परहेज़गार बन जाते तो अल्लाह के पास अच्छा बदला पाते, काश वह जानते होते। **(103)**

ऐ लोगो जो ईमान लाए हो (मोमिनों)! राइना न कहो और उनज़ुरना (हमारी तरफ़ तवज्जह फ़रमाइए) कहो और सुनो, और काफ़िरों के लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है। **(104)**

अहले किताब में से जिन लोगों ने कुफ़्र किया वह नहीं चाहते और न मुश्रिक कि तुम पर तुम्हारे रब की तरफ़ से कोई भलाई नाज़िल की जाए और अल्लाह जिसे चाहता है अपनी रहमत से ख़ास कर लेता है और अल्लाह बड़े फ़ज़्ल वाला है। **(105)**

कोई आयत जिसे हम मनसूख़ करते हैं या उसे हम भुला देते हैं उस से बेहतर या उस जैसी ले आते हैं, क्या तू नहीं जानता कि अल्लाह हर शै पर क़ादिर है। (106)

क्या तू नहीं जानता कि अल्लाह के लिए है आस्मानों और ज़मीन की बादशाहत, और तुम्हारे लिए नहीं अल्लाह के सिवा कोई हामी और न मददगार। (107)

क्या तुम चाहते हो कि अपने रसूल से सवाल करो जैसे सवाल किए गए इस से पहले मूसा (अ) से, और जो ईमान के बदले कुफ़्र इख़्तियार कर ले सो वह भटक गया सीधे रास्ते से। (108)

बहुत से अहले किताब ने चाहा कि वह काश तुम्हें लौटा दें तुम्हारे ईमान के बाद कुफ़्र में, अपने दिल के हसद की वजह से, उस के बाद जब कि उन पर हक़ वाज़ेह हो गया, पस तुम माफ़ कर दो और दरगुज़र करो यहां तक कि अल्लाह अपना हुक्म लाए, बेशक अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है। (109)

और नमाज़ क़ाइम करो और देते रहो ज़कात, और अपने लिए जो भलाई आगे भेजोगे तुम उसे पा लोगे अल्लाह के पास, बेशक तुम जो कुछ करते हो अल्लाह उसे देखने वाला है। (110)

और उन्हों ने कहा हरगिज़ दाख़िल न होगा जन्नत में सिवाए उस के जो यहूदी हो या नसरानी, यह उन की झूटी आर्ज़ूएं हैं, कह दीजिए तुम लाओ अपनी दलील अगर तुम सच्चे हो। (111)

क्यों नहीं? जिस ने अपना चेहरा अल्लाह के लिए झुका दिया और वह नेकोकार हो तो उस के लिए उस का अजर उस के रब के पास है, और उन पर कोई ख़ौफ़ नहीं और न वह ग़मगीन होंगे। (112)

مَا نَنۡسَخۡ مِنۡ اٰيَةٍ اَوۡ نُنۡسِهَا نَاۡتِ بِخَيۡرٍ مِّنۡهَاۤ اَوۡ مِثۡلِهَا ؕ

या उस जैसा	उस से	बेहतर	ले आते हैं	या उसे भुला देते हैं	कोई आयत	जो हम मनसूख़ करते हैं

اَلَمۡ تَعۡلَمۡ اَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَىۡءٍ قَدِيۡرٌ ﴿١٠٦﴾ اَلَمۡ تَعۡلَمۡ اَنَّ اللّٰهَ لَهٗ

उस के लिए	कि अल्लाह	क्या तू नहीं जानता	106	क़ादिर	हर शै	पर	कि अल्लाह	तू जानता	क्या नहीं

مُلۡكُ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ ؕ وَمَا لَـكُمۡ مِّنۡ دُوۡنِ اللّٰهِ مِنۡ

कोई	अल्लाह के सिवा	से	तुम्हारे लिए	और नहीं	और ज़मीन	आस्मानों	बादशाहत

وَّلِىٍّ وَّلَا نَصِيۡرٍ ﴿١٠٧﴾ اَمۡ تُرِيۡدُوۡنَ اَنۡ تَسۡـَٔلُوۡا رَسُوۡلَـكُمۡ كَمَا

जैसे	अपना रसूल	सवाल करो	कि	क्या तुम चाहते हो	107	और न मददगार	हामी

سُٮِٕلَ مُوۡسٰى مِنۡ قَبۡلُ ؕ وَمَنۡ يَّتَبَدَّلِ الۡكُفۡرَ بِالۡاِيۡمَانِ

ईमान के बदले	कुफ़्र	इख़्तियार कर ले	और जो	इस से पहले	मूसा	सवाल किए गए

فَقَدۡ ضَلَّ سَوَآءَ السَّبِيۡلِ ﴿١٠٨﴾ وَدَّ كَثِيۡرٌ مِّنۡ اَهۡلِ الۡكِتٰبِ

अहले किताब	से	बहुत	चाहा	108	रास्ता	सीधा	सो वह भटक गया

لَوۡ يَرُدُّوۡنَكُمۡ مِّنۡۢ بَعۡدِ اِيۡمَانِكُمۡ كُفَّارًا ۖۚ حَسَدًا مِّنۡ عِنۡدِ

वजह से	हसद	कुफ़्र में	तुम्हारे ईमान	बाद	से	काश तुम्हें लौटा दें

اَنۡفُسِهِمۡ مِّنۡۢ بَعۡدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الۡحَـقُّ ۚ فَاعۡفُوۡا

पस तुम माफ़ कर दो	हक़	उन पर	वाज़ेह हो गया	जब कि	बाद	अपने दिल

وَاصۡفَحُوۡا حَتّٰى يَاۡتِىَ اللّٰهُ بِاَمۡرِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَىۡءٍ

चीज़	हर	पर	बेशक अल्लाह	अपना हुक्म	लाए अल्लाह	यहां तक	और दरगुज़र करो

قَدِيۡرٌ ﴿١٠٩﴾ وَاَقِيۡمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ ؕ وَمَا تُقَدِّمُوۡا الثلثة

आगे भेजोगे	और जो	ज़कात	और देते रहो	नमाज़	और तुम क़ाइम करो	109	क़ादिर

لِاَنۡفُسِكُمۡ مِّنۡ خَيۡرٍ تَجِدُوۡهُ عِنۡدَ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعۡمَلُوۡنَ

जो कुछ तुम करते हो	बेशक अल्लाह	अल्लाह के पास	तुम पा लोगे उसे	भलाई	अपने लिए

بَصِيۡرٌ ﴿١١٠﴾ وَقَالُوۡا لَنۡ يَّدۡخُلَ الۡجَـنَّةَ اِلَّا مَنۡ كَانَ هُوۡدًا

यहूदी	हो	जो	सिवाए	जन्नत	हरगिज़ दाख़िल न होगा	और उन्हों ने कहा	110	देखने वाला

اَوۡ نَصٰرٰى ؕ تِلۡكَ اَمَانِيُّهُمۡ ؕ قُلۡ هَاتُوۡا بُرۡهَانَكُمۡ اِنۡ كُنۡتُمۡ

अगर तुम हो	अपनी दलील	तुम लाओ	कह दीजिए	झूटी आर्ज़ूएं	यह	या नसरानी

صٰدِقِيۡنَ ﴿١١١﴾ بَلٰى مَنۡ اَسۡلَمَ وَجۡهَهٗ لِلّٰهِ وَهُوَ مُحۡسِنٌ فَلَهٗۤ

तो उस के लिए	नेकोकार	और वह	अल्लाह के लिए	अपना चेहरा	झुका दिया	जिस	क्यों नहीं	111	सच्चे

اَجۡرُهٗ عِنۡدَ رَبِّهٖ وَلَا خَوۡفٌ عَلَيۡهِمۡ وَلَا هُمۡ يَحۡزَنُوۡنَ ﴿١١٢﴾ ع ١٣ ٩ ١٣

112	ग़मगीन होंगे	वह	और न	उन पर	कोई ख़ौफ़	और न	उस का रब	पास	उस का अजर

وَقَالَتِ الْيَهُوْدُ لَيْسَتِ النَّصٰرٰى عَلٰى شَيْءٍ ۖ وَّقَالَتِ النَّصٰرٰى

नसारा	और कहा	किसी चीज़	पर	नसारा	नहीं	यहूद	और कहा

لَيْسَتِ الْيَهُوْدُ عَلٰى شَيْءٍ ۙ وَّهُمْ يَتْلُوْنَ الْكِتٰبَ ؕ كَذٰلِكَ قَالَ الَّذِيْنَ

जो लोग	कहा	इसी तरह	किताब	पढ़ते हैं	हालांकि वह	किसी चीज़ पर	यहूद	नहीं

لَا يَعْلَمُوْنَ مِثْلَ قَوْلِهِمْ ۚ فَاللّٰهُ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ

क़ियामत के दिन	फ़ैसला करेगा उन के दरमियान	सो अल्लाह	उन की बात	जैसी	इल्म नहीं रखते

فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿١١٣﴾ وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ مَّنَعَ

रोका	से-जो	बड़ा ज़ालिम	और कौन	113	इख़्तिलाफ़ करते	उस में	वह थे	जिस में

مَسٰجِدَ اللّٰهِ اَنْ يُّذْكَرَ فِيْهَا اسْمُهٗ وَسَعٰى فِيْ خَرَابِهَا ؕ

उस की वीरानी	में	और कोशिश की	उस का नाम	उस में	ज़िक्र किया जाए	कि	अल्लाह की मस्जिदें

اُولٰٓئِكَ مَا كَانَ لَهُمْ اَنْ يَّدْخُلُوْهَآ اِلَّا خَآئِفِيْنَ ؕ لَهُمْ فِي الدُّنْيَا

दुनिया में	उन के लिए	डरते हुए	मगर	वहां दाख़िल होते	कि	उन के लिए	न था	यह लोग

خِزْيٌ وَّلَهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿١١٤﴾ وَلِلّٰهِ الْمَشْرِقُ وَالْمَغْرِبُ ۚ

और मग़्रिब	और अल्लाह के लिए मश्रिक़	114	बड़ा	अ़ज़ाब	आख़िरत में	और उन के लिए	रुसवाई

فَاَيْنَمَا تُوَلُّوْا فَثَمَّ وَجْهُ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿١١٥﴾

115	जानने वाला है	वुस्अ़त वाला	बेशक अल्लाह	अल्लाह का सामना	तो उस तरफ़	तुम मुँह करो	सो जिस तरफ़

وَقَالُوا اتَّخَذَ اللّٰهُ وَلَدًا ۙ سُبْحٰنَهٗ ؕ بَلْ لَّهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ

आस्मानों मे	जो	बल्कि उस के लिए	वह पाक है	बेटा	बना लिया अल्लाह ने	और उन्हों ने कहा

وَالْاَرْضِ ؕ كُلٌّ لَّهٗ قٰنِتُوْنَ ﴿١١٦﴾ بَدِيْعُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ

और ज़मीन	आस्मानों	पैदा करने वाला	116	ज़ेरे फ़रमान	उस के लिए	सब	और ज़मीन

وَاِذَا قَضٰٓى اَمْرًا فَاِنَّمَا يَقُوْلُ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ﴿١١٧﴾ وَقَالَ الَّذِيْنَ

जो लोग	और कहा	117	तो वह हो जाता है	"हो जा"	उसे	कहता है	तो यही	कोई काम	वह फ़ैसला करता है	और जब

لَا يَعْلَمُوْنَ لَوْلَا يُكَلِّمُنَا اللّٰهُ اَوْ تَاْتِيْنَآ اٰيَةٌ ؕ كَذٰلِكَ

इसी तरह	कोई निशानी	हमारे पास आती	या	हम से कलाम करता अल्लाह	क्यों नहीं	इल्म नहीं रखते

قَالَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ مِّثْلَ قَوْلِهِمْ ؕ تَشَابَهَتْ قُلُوْبُهُمْ ؕ

उन के दिल	एक जैसे हो गए	इन की बात	जैसी	इन से पहले	जो लोग	कहा

قَدْ بَيَّنَّا الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يُّوْقِنُوْنَ ﴿١١٨﴾ اِنَّآ اَرْسَلْنٰكَ بِالْحَقِّ

हक़ के साथ	आप को भेजा	बेशक हम	118	यक़ीन रखते हैं	लोगों के लिए	निशानियां	हम ने वाज़ेह कर दी

بَشِيْرًا وَّنَذِيْرًا ۙ وَّلَا تُسْـَٔلُ عَنْ اَصْحٰبِ الْجَحِيْمِ ﴿١١٩﴾

119	दोज़ख़ वाले	से	और न आप से पूछा जाएगा	और डराने वाला	ख़ुशख़बरी देने वाला

और यहूद ने कहा नसारा किसी चीज़ पर नहीं, और नसारा ने कहा यहूदी किसी चीज़ पर नहीं हालांकि वह पढ़ते हैं किताब। इसी तरह उन लोगों ने उन जैसी बात कही जो इल्म नहीं रखते, सो अल्लाह उन के दरमियान क़ियामत के दिन फ़ैसला करेगा जिस (बात) में वह इख़्तिलाफ़ करते थे। (113)

और उस से बड़ा ज़ालिम कौन जिस ने अल्लाह की मस्जिदों से रोका कि उन में अल्लाह का नाम लिया जाए, और उस की वीरानी की कोशिश की, उन लोगों के लिए (हक़) न था कि वहां दाख़िल होते मगर डरते हुए, उन के लिए दुनिया में रुसवाई है और उन के लिए आख़िरत में बड़ा अ़ज़ाब है। (114)

और अल्लाह के लिए है मश्रिक़ और मग़्रिब, सो जिस तरफ़ तुम मुँह करो उसी तरफ़ अल्लाह का सामना है, बेशक अल्लाह वुस्अ़त वाला, जानने वाला है। (115)

और उन्हों ने कहा अल्लाह ने बेटा बना लिया है, वह पाक है, बल्कि उसी के लिए है जो आस्मानों में और ज़मीन में है, सब उसी के ज़ेरे फ़रमान हैं। (116)

वह पैदा करने वाला है आस्मानों का और ज़मीन का, और जब वह किसी काम का फ़ैसला करता है तो उसे यही कहता है "हो जा" तो वह हो जाता है। (117)

और जो लोग इल्म नहीं रखते, उन्हों ने कहा अल्लाह हम से कलाम क्यों नहीं करता या हमारे पास कोई निशानी क्यों नहीं आती? इसी तरह इन से पहले लोगों ने इन जैसी बात कही, इन (अगले पिछले गुमराहों) के दिल एक जैसे हैं। हम ने यक़ीन रखने वाले लोगों के लिए निशानियां वाज़ेह कर दी हैं। (118)

बेशक हम ने आप को भेजा हक़ के साथ, ख़ुशख़बरी देने वाला, डराने वाला, और आप से न पूछा जाएगा दोज़ख़ वालों के बारे में। (119)

وَلَنْ تَرْضٰى عَنْكَ الْيَهُوْدُ وَلَا النَّصٰرٰى حَتّٰى تَتَّبِعَ مِلَّتَهُمْ ؕ

उन का दीन	आप पैरवी (न) करें	जब तक	नसारा	और न	यहूदी	आप से	और हरगिज़ राज़ी न होंगे

قُلْ اِنَّ هُدَى اللّٰهِ هُوَ الْهُدٰى ؕ وَلَئِنِ اتَّبَعْتَ اَهْوَآءَهُمْ بَعْدَ الَّذِيْ

वह जो कि (जबकि)	बाद	उन की ख़ाहिशात	आप ने पैरवी की	और अगर	हिदायत	वही	अल्लाह की हिदायत	बेशक	कह दें

جَآءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ۙ مَا لَكَ مِنَ اللّٰهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ﴿١٢٠﴾ وقف منزل

120	मददगार	और न	हिमायत करने वाला	कोई	अल्लाह से	नहीं आप के लिए	इल्म	से	आप के पास आगया

اَلَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَتْلُوْنَهٗ حَقَّ تِلَاوَتِهٖ ؕ اُولٰٓئِكَ يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ ؕ

ईमान रखते हैं उस पर	वही लोग	उस की तिलावत	हक़	उस की तिलावत करते हैं	किताब	हम ने दी उन्हें	जिन्हें

وَمَنْ يَّكْفُرْ بِهٖ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿١٢١﴾ يٰبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اذْكُرُوْا ع ١٤ ٩ ١٤

तुम याद करो	ऐ बनी इस्राईल	121	ख़सारह पाने वाले	वह	वही	इन्कार करें उस का	और जो

نِعْمَتِيَ الَّتِيْٓ اَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَاَنِّيْ فَضَّلْتُكُمْ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٢٢﴾

122	ज़माने वाले	पर	तुम्हें फ़ज़ीलत दी	और यह कि मैं ने	तुम पर	मैं ने इन्आम की	जो कि	मेरी नेमत

وَاتَّقُوْا يَوْمًا لَّا تَجْزِيْ نَفْسٌ عَنْ نَّفْسٍ شَيْـًٔا وَّلَا يُقْبَلُ مِنْهَا

उस से	और न क़ुबूल किया जाएगा	कुछ	किसी शख़्स से	कोई शख़्स	बदला न होगा	वह दिन	और डरो

عَدْلٌ وَّلَا تَنْفَعُهَا شَفَاعَةٌ وَّلَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ ﴿١٢٣﴾ وَاِذِ ابْتَلٰٓى

आज़माया	और जब	123	मदद की जाएगी	उन	और न	कोई सिफ़ारिश	उसे नफ़ा देगी	और न	कोई सुआवज़ा

اِبْرٰهٖمَ رَبُّهٗ بِكَلِمٰتٍ فَاَتَمَّهُنَّ ؕ قَالَ اِنِّيْ جَاعِلُكَ لِلنَّاسِ اِمَامًا ؕ قَالَ

उस ने कहा	इमाम	लोगों का	तुम्हें बनाने वाला हूँ	बेशक मैं	उस ने फ़रमाया	तो वह पूरी कर दीं	चन्द बातों से	उन का रब	इब्राहीम (अ)

وَمِنْ ذُرِّيَّتِيْ ؕ قَالَ لَا يَنَالُ عَهْدِي الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٢٤﴾ وَاِذْ جَعَلْنَا الْبَيْتَ

ख़ाने कअ़बा	बनाया हम ने	और जब	124	ज़ालिम (जमा)	मेरा अ़हद	नही पहुँचता	उस ने फ़रमाया	मेरी औलाद	और से

مَثَابَةً لِّلنَّاسِ وَاَمْنًا ؕ وَاتَّخِذُوْا مِنْ مَّقَامِ اِبْرٰهٖمَ مُصَلًّى ؕ وَعَهِدْنَآ

और हम ने हुक्म दिया	नमाज़ की जगह	“मुक़ामे इब्राहीम”	से	और तुम बनाओ	और अम्न की जगह	लोगों के लिए	इज्तिमाअ़ की जगह

اِلٰٓى اِبْرٰهٖمَ وَاِسْمٰعِيْلَ اَنْ طَهِّرَا بَيْتِيَ لِلطَّآئِفِيْنَ وَالْعٰكِفِيْنَ وَالرُّكَّعِ

और रुकूअ़ करने वाले	और एतिकाफ़ करने वाले	तवाफ़ करने वालों के लिए	मेरा घर	पाक रखें	कि वह	और इस्माईल (अ)	इब्राहीम (अ) को

السُّجُوْدِ ﴿١٢٥﴾ وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهٖمُ رَبِّ اجْعَلْ هٰذَا بَلَدًا اٰمِنًا وَّارْزُقْ

और रोज़ी दे	अम्न वाला	यह शहर	बना	ऐ मेरे रब	इब्राहीम (अ)	कहा	और जब	125	सिज्दा करने वाले

اَهْلَهٗ مِنَ الثَّمَرٰتِ مَنْ اٰمَنَ مِنْهُمْ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ قَالَ وَمَنْ

और जो	उस ने फ़रमाया	और आख़िरत का दिन	अल्लाह पर	उन से	ईमान लाए	जो	फल (जमा)	से	इस के रहने वाले

كَفَرَ فَاُمَتِّعُهٗ قَلِيْلًا ثُمَّ اَضْطَرُّهٗٓ اِلٰى عَذَابِ النَّارِ ؕ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿١٢٦﴾

126	लौटने की जगह	और बुरी	दोज़ख़ का अ़ज़ाब	तरफ़	मजबूर करूँगा उस को	फिर	थोड़ा	उसे नफ़ा दूँगा	उस ने कुफ़्र किया

और आप से हरगिज़ राज़ी न होंगे यहूदी और न नसारा जब तक आप उन के दीन की पैरवी न करें, कह दें! बेशक अल्लाह की हिदायत वही हिदायत है, और अगर आप ने उन की ख़ाहिशात की पैरवी की उस के बाद जब कि आप के पास इल्म आ गया, आप के लिए अल्लाह से कोई हिमायत करने वाला नहीं और न मददगार। (120)

हम ने जिन्हें किताब दी वह उस की तिलावत करते हैं जैसे तिलावत का हक़ है, वह उस पर ईमान रखते हैं, और जो उस का इन्कार करें वही ख़सारह पाने वाले हैं। (121)

ऐ बनी इस्राईल! मेरी नेमत याद करो जो मैं ने तुम पर की और यह कि मैं ने तुम्हें ज़माने वालों पर फ़ज़ीलत दी। (122)

और उस दिन से डरो (जिस दिन) कोई शख़्स बदला न हो सकेगा किसी शख़्स का कुछ भी, और न उस से कोई सुआवज़ा क़ुबूल किया जाएगा, और न उसे कोई सिफ़ारिश नफ़ा देगी, और न उन की मदद की जाएगी। (123)

और जब इब्राहीम (अ) को उन के रब ने चन्द बातों से आज़माया तो उन्हों नें वह पूरी कर दीं, उस ने फ़रमाया बेशक मैं तुम्हें लोगों का इमाम बनाने वाला हूँ, उस ने कहा और मेरी औलाद को (भी)? उस ने फ़रमाया मेरा अ़हद ज़ालिमों को नहीं पहुँचता। (124)

और जब हम नें ख़ाने कअ़बा को बनाया लोगों के लिए (बार बार) लौटने (इज्तिमाअ़) की जगह और अम्न की जगह, और “मुक़ामे इब्राहीम” को नमाज़ की जगह बनाओ, और हम ने हुक्म दिया इब्राहीम (अ) और इस्माईल (अ) को कि वह मेरा घर पाक रखें तवाफ़ करने वालों और एतिकाफ़ करने वालों के लिए, और रुकूअ़ सिज्दा करने वालों के लिए। (125)

और जब इब्राहीम (अ) ने कहा ऐ मेरे रब! इस शहर को बना अम्न वाला, और इस के रहने वालों को फलों की रोज़ी दे जो उन में से ईमान लाए अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर, उस ने फ़रमाया जिस ने कुफ़्र किया उस को थोड़ा सा नफ़ा दूँगा फिर उस को मजबूर करूँगा दोज़ख़ के अ़ज़ाब की तरफ़, और वह लौटने की बुरी जगह है। (126)

وَاِذْ يَرْفَعُ اِبْرٰهٖمُ الْقَوَاعِدَ مِنَ الْبَيْتِ وَاِسْمٰعِيْلُ ؕ رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا ؕ

कुबूल फ़रमा ले हम से	ऐ हमारे रब	और इस्माईल (अ)	ख़ाने कअ़बा	से	बुन्यादें	इब्राहीम (अ)	उठाते थे	और जब

اِنَّكَ اَنْتَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿١٢٧﴾ رَبَّنَا وَاجْعَلْنَا مُسْلِمَيْنِ لَكَ

अपना	फ़रमांबरदार	और हमें बना ले	ऐ हमारे रब	127	जानने वाला	सुनने वाला	तू	बेशक तू

وَمِنْ ذُرِّيَّتِنَآ اُمَّةً مُّسْلِمَةً لَّكَ ۠ وَاَرِنَا مَنَاسِكَنَا وَتُبْ عَلَيْنَا ۚ

और हमारी तौबा कुबूल फ़रमा	हज के तरीक़े	और हमें दिखा	अपनी	फ़रमांबरदार	उम्मत	हमारी औलाद	और से

اِنَّكَ اَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ﴿١٢٨﴾ رَبَّنَا وَابْعَثْ فِيْهِمْ رَسُوْلًا

एक रसूल	उन में	और भेज	ऐ हमारे रब	128	रहम करने वाला	तौबा कुबूल करने वाला	तू	बेशक

مِّنْهُمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِكَ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ

और हिक्मत (दानाई)	“किताब”	और उन्हें तालीम दे	तेरी आयतें	उन पर	वह पढ़े	उन से

١٥ ع ٨ ١٥ وَيُزَكِّيْهِمْ ؕ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿١٢٩﴾ ع وَمَنْ يَّرْغَبُ عَنْ مِّلَّةِ

दीन	से	मुँह मोड़े	और कौन	129	हिक्मत वाला	ग़ालिब	तू	बेशक	और उन्हें पाक करे

اِبْرٰهٖمَ اِلَّا مَنْ سَفِهَ نَفْسَهٗ ؕ وَلَقَدِ اصْطَفَيْنٰهُ فِى الدُّنْيَا ۚ

दुनिया में	हम ने उसे चुन लिया	और बेशक	अपने आप	बेवकूफ़ बनाया	जिस ने	सिवाए	इब्राहीम (अ)

وَاِنَّهٗ فِى الْاٰخِرَةِ لَمِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿١٣٠﴾ اِذْ قَالَ لَهٗ رَبُّهٗٓ اَسْلِمْ ۙ

सर झुका दे	उस का रब	उस को	जब कहा	130	नेकोकार (जमा)	से	आख़िरत में	और बेशक वह

قَالَ اَسْلَمْتُ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٣١﴾ وَوَصّٰى بِهَآ اِبْرٰهٖمُ بَنِيْهِ

अपने बेटे	इब्राहीम (अ)	उस की	और वसीयत की	131	तमाम जहान	रब के लिए	मैं ने सर झुका दिया	उस ने कहा

وَيَعْقُوْبُ ؕ يٰبَنِىَّ اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰى لَكُمُ الدِّيْنَ فَلَا تَمُوْتُنَّ اِلَّا

मगर	पस तुम हरगिज़ न मरना	दीन	तुम्हारे लिए	चुन लिया	बेशक अल्लाह	मेरे बेटो	और याक़ूब (अ)

وَاَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿١٣٢﴾ ؕ اَمْ كُنْتُمْ شُهَدَآءَ اِذْ حَضَرَ يَعْقُوْبَ الْمَوْتُ ۙ

मौत	याक़ूब (अ)	आई	जब	मौजूद	क्या तुम थे	132	मुसलमान (जमा)	और तुम

اِذْ قَالَ لِبَنِيْهِ مَا تَعْبُدُوْنَ مِنْۢ بَعْدِىْ ؕ قَالُوْا نَعْبُدُ

हम इबादत करेंगे	उन्हों ने कहा	मेरे बाद	किस की तुम इबादत करोगे?	अपने बेटों को	जब उस ने कहा

اِلٰهَكَ وَاِلٰهَ اٰبَآئِكَ اِبْرٰهٖمَ وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ اِلٰهًا وَّاحِدًا ۚ

वाहिद	माबूद	और इस्हाक़ (अ)	और इस्माईल (अ)	इब्राहीम (अ)	तेरे बाप दादा	और माबूद	तेरा माबूद

وَّنَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ ﴿١٣٣﴾ تِلْكَ اُمَّةٌ قَدْ خَلَتْ ۚ لَهَا مَا كَسَبَتْ

जो उस ने कमाया	उस के लिए	गुज़र गई	एक उम्मत	यह	133	फ़रमांबरदार	उसी के	और हम

وَلَكُمْ مَّا كَسَبْتُمْ ۚ وَلَا تُسْـَٔلُوْنَ عَمَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٣٤﴾

134	जो वह करते थे	उस के बारे में	और तुम से न पूछा जाएगा	जो तुम ने कमाया	और तुम्हारे लिए

और जब उठाते थे इब्राहीम (अ) और इस्माईल (अ) ख़ाने कअ़बा की बुन्यादें (यह दुआ़ करते थे) ऐ हमारे परवरदिगार! हम से कुबूल फ़रमा ले, बेशक तू सुनने वाला, जानने वाला है। (127)

ऐ हमारे रब! और हमें अपना फ़रमांबरदार बना ले और हमारी औलाद में से एक अपनी फ़रमांबरदार उम्मत बना और हमें हज के तरीक़े दिखा और हमारी तौबा कुबूल फ़रमा, बेशक तू ही तौबा कुबूल करने वाला, रहम करने वाला है। (128)

ऐ हमारे रब! और उन में एक रसूल भेज उन में से, वह उन पर तेरी आयतें पढ़े और उन्हें “किताब” और “हिक्मत” (दानाई) की तालीम दे, और उन्हें पाक करे, बेशक तू ही ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (129)

और कौन है जो मुँह मोड़े इब्राहीम (अ) के दीन से? सिवाए उस के जिस ने अपने आप को बेवकूफ़ बनाया, और बेशक हम ने उसे दुनिया में चुन लिया। और बेशक वह आख़िरत में नेकोकारों में से है। (130)

जब उस को उस के रब ने कहा तू सर झुका दे, उस ने कहा मैं ने तमाम जहानों के रब के लिए सर झुका दिया। (131)

और इब्राहीम (अ) ने अपने बेटों को और याक़ूब (अ) ने (भी) उसी की वसीयत की, ऐ मेरे बेटो! अल्लाह ने बेशक चुन लिया है तुम्हारे लिए दीन, पस तुम हरगिज़ न मरना मगर मुसलमान। (132)

क्या तुम थे मौजूद जब याक़ूब (अ) को मौत आई, जब उस ने अपने बेटों को कहाः मेरे बाद तुम किस की इबादत करोगे? उन्हों ने कहा हम इबादत करेंगे तेरे माबूद की, और तेरे बाप दादा इब्राहीम (अ) और इस्माईल (अ) और इस्हाक़ (अ) के माबूदे वाहिद की, और हम उसी के फ़रमांबरदार हैं। (133)

यह एक उम्मत थी जो गुज़र गई, उस के लिए जो उस ने कमाया और तुम्हारे लिए है जो तुम ने कमाया, और तुम से उस के बारे में न पूछा जाएगा जो वह करते थे। (134)

وَقَالُوْا كُوْنُوْا هُوْدًا اَوْ نَصٰرٰى تَهْتَدُوْا ؕ قُلْ بَلْ مِلَّةَ اِبْرٰهٖمَ

इब्राहीम (अ)	बल्कि दीन	कह दीजिए	तुम हिदायत पा लोगे	नसरानी	या	यहूदी	हो जाओ	और उन्हों ने कहा

حَنِيْفًا ؕ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١٣٥﴾ قُوْلُوْٓا اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَمَآ اُنْزِلَ

नाज़िल किया गया	और जो	अल्लाह पर	हम ईमान लाए	कह दो	135	मुश्रिकीन	से	और न थे	एक अल्लाह के हो जाने वाले

اِلَيْنَا وَمَآ اُنْزِلَ اِلٰٓى اِبْرٰهٖمَ وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ

और याकूब (अ)	और इस्हाक़ (अ)	और इस्माईल (अ)	इब्राहीम (अ)	तरफ़	नाज़िल किया गया	और जो	हमारी तरफ़

وَالْاَسْبَاطِ وَمَآ اُوْتِىَ مُوْسٰى وَعِيْسٰى وَمَآ اُوْتِىَ النَّبِيُّوْنَ مِنْ رَّبِّهِمْ ۚ

उन के रब से	नबियों	दिया गया	और जो	और ईसा (अ)	मूसा (अ)	दिया गया	और जो	और औलादे याकूब (अ)

لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْهُمْ ۗ وَنَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ ﴿١٣٦﴾ فَاِنْ

पस अगर	136	फ़रमांबरदार	उसी के	और हम	उन से	किसी एक	दरमियान	हम फ़र्क़ नहीं करते

اٰمَنُوْا بِمِثْلِ مَآ اٰمَنْتُمْ بِهٖ فَقَدِ اهْتَدَوْا ۚ وَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا

तो बेशक वही	उन्हों ने मुँह फेरा	और अगर	तो वह हिदायत पा गए	उस पर	तुम ईमान लाए	जैसे	वह ईमान लाएं

هُمْ فِىْ شِقَاقٍ ۚ فَسَيَكْفِيْكَهُمُ اللّٰهُ ۚ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿١٣٧﴾

137	जानने वाला	सुनने वाला	और वह	अल्लाह	पस अ़नक़रीब आप के लिए उन के मुक़ाबिले में काफ़ी होगा	ज़िद	में	वह

صِبْغَةَ اللّٰهِ ۚ وَمَنْ اَحْسَنُ مِنَ اللّٰهِ صِبْغَةً ۗ وَّنَحْنُ لَهٗ

उसी की	और हम	रंग	अल्लाह	से	अच्छा	और किस	रंग अल्लाह का

عٰبِدُوْنَ ﴿١٣٨﴾ قُلْ اَتُحَآجُّوْنَنَا فِى اللّٰهِ وَهُوَ رَبُّنَا وَرَبُّكُمْ ۚ وَلَنَآ

और हमारे लिए	और तुम्हारा रब	हमारा रब	हालांकि वही	अल्लाह के बारे में	क्या तुम हम से झगड़ा करते हो?	कह दीजिए	138	इबादत करने वाले

اَعْمَالُنَا وَلَكُمْ اَعْمَالُكُمْ ۚ وَنَحْنُ لَهٗ مُخْلِصُوْنَ ﴿١٣٩﴾ اَمْ تَقُوْلُوْنَ

तुम कहते हो	क्या	139	ख़ालिस	उसी के	और हम	तुम्हारे अ़मल	और तुम्हारे लिए	हमारे अ़मल

اِنَّ اِبْرٰهٖمَ وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ وَالْاَسْبَاطَ كَانُوْا

थे	और औलादे याकूब (अ)	और याकूब (अ)	और इस्हाक़ (अ)	और इस्माईल (अ)	इब्राहीम (अ)	कि

هُوْدًا اَوْ نَصٰرٰى ؕ قُلْ ءَاَنْتُمْ اَعْلَمُ اَمِ اللّٰهُ ؕ وَمَنْ اَظْلَمُ

बड़ा ज़ालिम	और कौन	या अल्लाह	ज़ियादा जानने वाले	क्या तुम	कह दीजिए	या नसरानी	यहूदी

مِمَّنْ كَتَمَ شَهَادَةً عِنْدَهٗ مِنَ اللّٰهِ ؕ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ

बेख़बर	और नहीं अल्लाह	अल्लाह से	उस के पास	गवाही	छुपाई	से-जिस

عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿١٤٠﴾ تِلْكَ اُمَّةٌ قَدْ خَلَتْ ۚ لَهَا مَا كَسَبَتْ

उस ने कमाया	जो	उस के लिए	गुज़र चुकी	एक उम्मत	यह	140	तुम करते हो	उस से जो

وَلَكُمْ مَّا كَسَبْتُمْ ۚ وَلَا تُسْـَٔلُوْنَ عَمَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٤١﴾ ع ١٦ ١٢ ١٦

141	वह करते थे	उस से जो	और तुम से न पूछा जाएगा	जो तुम ने कमाया	और तुम्हारे लिए

और उन्हों ने कहा तुम यहूदी या नसरानी हो जाओ हिदायत पा लोगे, कह दीजिए बल्कि (हम पैरवी करते हैं) एक अल्लाह के हो जाने वाले इब्राहीम (अ) के दीन की और वह मुश्रिकों में से न थे। (135)

कह दो हम ईमान लाए अल्लाह पर और जो हमारी तरफ़ नाज़िल किया गया और जो नाज़िल किया गया इब्राहीम (अ) और इस्माईल (अ) और इस्हाक़ (अ) और याकूब (अ) और औलादे याकूब (अ) की तरफ़, और जो दिया गया मूसा (अ) और ईसा (अ) को और जो दिया गया नबियों को उन के रब की तरफ़ से, हम उन में से किसी एक के दरमियान फ़र्क़ नहीं करते, और हम उसी के फ़रमांबरदार हैं। (136)

पस अगर वह ईमान ले आएं जैसे तुम उस पर ईमान लाए हो तो वह हिदायत पा गए, और अगर उन्हों ने मुँह फेरा तो बेशक वही ज़िद में हैं, पस अ़नक़रीब उन के मुक़ाबिले में आप के लिए अल्लाह काफ़ी होगा, और वह सुनने वाला, जानने वाला है। (137)

(हम ने लिया) रंग अल्लाह का, और किस का अच्छा है रंग अल्लाह से? और हम उसी की इबादत करने वाले हैं। (138)

कह दीजिए, क्या तुम हम से झगड़ते हो अल्लाह के बारे में हालांकि वही है हमारा रब और तुम्हारा रब, और हमारे लिए हमारे अ़मल और तुम्हारे लिए तुम्हारे अ़मल, और हम ख़ालिस उसी के हैं। (139)

क्या तुम कहते हो कि इब्राहीम (अ) और इस्माईल (अ), और इस्हाक़ (अ), और याकूब (अ) और औलादे याकूब (अ) यहूदी थे या नसरानी। कह दीजिए क्या तुम ज़ियादा जानने वाले हो या अल्लाह? और कौन है बड़ा ज़ालिम उस से जिस ने वह गवाही छुपाई जो अल्लाह की तरफ़ से उस के पास थी, और अल्लाह बेख़बर नहीं उस से जो तुम करते हो। (140)

यह एक उम्मत थी जो गुज़र चुकी, उस के लिऐ है जो उस ने कमाया और तुम्हारे लिए है जो तुम ने कमाया, और तुम से उस के बारे में न पूछा जाएगा जो वह करते थे। (141)